चन्दामामा
माँ-बच्चों का मासिक पत्र

Photo by S. H. Kotak

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

देखो तो आया है कौन ?

प्रेषिका :
सरोजरानी सिन्हा, जमशेदपुर

रेशमी कमीज़ की शान तो
बस रेशमी कमीज़ में ही होती है!

बिन्नी की स्पन सिल्क शर्टिंग
—एक उत्तम और किफ़ायती कपड़ा

रेशमी कमीज से आपकी सजधज
बिल्कुल निराली ही नज़र आएगी।
इसे पहनकर आप अत्यधिक आनन्द
और पूरा आत्मविश्वास अनुभव करेंगे।

कम दामों पर रेशम की एक ठाठदार
कमीज के लिए अपनी अगली कमीज़
बिन्नी के स्पन सिल्क शर्टिंग की
ही बनवाइए।

दी बंगलोर वुलन, कॉटन एण्ड
सिल्क मिल्स कंपनी लिमिटेड
एजेण्ट्स, सेक्रेटरीज और ट्रेजरर्स:
बिन्नी एण्ड कंपनी (मद्रास) लिमिटेड

अक्तूबर १९५७

विषय - सूची

★

एक प्रति ५० नये पैसे   वार्षिक चन्दा रु. ६-००

Remy
SNOW
वह सुन्दर है
वह उपयोग करती है
रेमि स्नो और
पाउडर

उपहार...

'कोडक' फ़िल्म इस्तेमाल कीजिए!

ग्राहकों को एक जरूरी सूचना !

ग्राहकों को पत्र-व्यवहार में अपनी ग्राहक-संख्या का उल्लेख अवश्य करना चाहिये। जिन पत्रों में ग्राहक-संख्या का उल्लेख न होगा, उन पर कोई ध्यान नहीं दिया जा सकेगा। पता बदल जाने पर तुरन्त नए पते की सूचना देनी चाहिए। यदि प्रति न मिले तो १० वीं तारीख से पहले ही सूचित कर देना चाहिए। बाद में आनेवाली शिकायतों पर कोई ध्यान नहीं दिया जाएगा।

व्यवस्थापक, "चन्दामामा"

आज मैं छत्रपति राजा बनूँगा और तुम बनो मेरे बहादुर सिपह सालार !

मेरे बहादुर सिपह सालार, लाना तो ज़रा मेरी तलवार !

छत्रपति राजाधि-राज महाराज हाज़िर हैं आप की तलवार और ताज !

तो आओ फिर दुश्मनों के दाँत खट्टे कर दें !

मुन्नू ख्याली दुनिया में !

ख़बरदार! जो सामने आयेगा, लोहे के चने चबायेगा !

मुँह की खायेगा और स्वर्गपुरी को सिधारेगा!
अहा हा हा – है कोई जो सामने आये मेरी तलवार की प्यास बुझाये!
धुम्र! धुम्र! तेरे घोड़े की टाँग टूट रही है!
मज़ा आया अपनी नकली बहादुरी दिखाने का।
हाय! मेरी हड्डी पसली टूट गई।
अगर सचमुच बहादुर बनना है तो दूध पियो और डालडा से पका खाना खा कर ज़्यादा ताक़त पाओ!
जी हाँ डालडा वनस्पति ताक़त का भंडार है। इसमें विटामिन ए और डी मिले हैं जिन से रोग रोकने की ताक़त पैदा होती है, और दांत व हड्डियाँ मज़बूत बनती हैं। पर जब भी डालडा खरीदिये डिब्बे पर खजूर का पेड़ देखना न भूलिये!

बिन्नी का कोट्सवॉल
एक उत्तम कपड़ा जो हर मौसम के लिए आदर्श है!
"जी भर के खेलो-कूदो मेरे बच्चो — कोट्सवॉल तुम्हें हमेशा सर्दी से बचाएगा और जैसा का तैसा सुहाना बना रहेगा।"
कोट्सवॉल आपके हर पैसे की पूरी क़ीमत अदा करता है, क्योंकि . . .
यह बहुत ही होशियारी से तैयार किये जानेवाले ऊँचे दर्जे के ऊन और सूत को वैज्ञानिक रीति से मिलाकर बनाया जाता है।
यह बहुत ही टिकाऊ होता है और हमेशा ही मुलायम बना रहता है।
यह बच्चों के लिए खास तौर से अच्छा है। इससे उनका सुकोमल बदन कभी रगड़ नहीं खा सकता।
यह हमेशा ही आकर्षक व सुहाना लगता है और सभी मौसमों के लिए अच्छा है।
यह गारन्टी दी जाती है कि कोट्सवॉल कभी सिकुड़कर तंग नहीं होगा!
कोट्सवॉल घर पर भी धोया जा सकता है। यह कई तरह के रंगों, छपाई, चौखानों व रेखाओं के लिए धारीदार डिज़ाइनों में मिलता है।
कोट्सवॉल
अपना जवाब नहीं रखता!
ज़्यादा गरम कपड़े बनवाने के लिए
बिन्नी का ऐंगोला लीजिए
मुफ़्त
बिन्नी के कोट्सवॉल से वस्त्र बनवाने के लिए डिज़ाइनोंवाली सचित्र पुस्तिका। १३ नये पैसों के टिकिट इस पते पर भेजिए: विभाग X, पोस्टबैग नं० २७०१, मद्रास १.
श्री बंगलोर वूलन, कॉटन एण्ड सिल्क मिल्स कं० लि०
मैनेजिंग एजेन्ट्स: बिन्नी एण्ड कं० (मद्रास) लि०

उसकी मुस्कान अच्छी फसल बताती है

नवयुवक किसान भविष्य पर मुस्करा रहा है.... यह एक ऐसा चित्र है जो अपनी कहानी खुद कहता है। कल्पना कीजिए, आप अपने चित्रों को कितना और पसंद करेंगे यदि आप उन्हें **गेवार्ट** फिल्म पर लेंगे। वे आपको सुखद क्षणों की याद दिलायेंगे। बाहर और अन्दर के चित्रों के लिये **गेवापेन ३३** और **गेवापेन ३६** आदर्श हैं। सुन्दर रंगीन प्रिन्ट और एन्लार्जमेन्ट के लिए **गेवाकलर** नेगेटिव (N5) इस्तेमाल कीजिये। ख्याल रखिये कि आपके फ़ोटो, ब्लेक एन्ड व्हाइट, व रंगीन, **गेवर्ट** कागज पर छापे जायें। (यह फोटो गेवापेन ३३ फिल्म पर पी. सी. पटेल द्वारा लिया गया है।)

अलाइड़ फ़ोटोग्राफ़िक्स प्राइवेट लिमिटेड,

कस्तूरी बिल्डिंग, जमशेदजी ताता रोड़, बम्बई - १

चन्दामामा

संचालक : चक्रपाणी

प्रति मास पाठकों से "चन्दामामा" में प्रकाशनार्थ बहुत-सी रचनाएँ पहुँचती हैं। अधिक सामग्री बच्चों से ही मिलती है, यद्यपि जाने माने लेखकों की कृतियाँ भी कम नहीं होतीं।

हम कई को प्रकाशित कर देते हैं। पर सब न प्रकाशित की जा सकती हैं, न की जानी चाहिये। क्योंकि कई ऐसी रचनायें भी आती हैं, जो "चन्दामामा" में प्रकाशित हो चुकी होती हैं। कई का ढांचा, "चन्दामामा" की कहानियों का सा होता है, केवल शब्दों का हेर-फेर रहता है। और कई प्रकाशन योग्य ही नहीं होनीं।

"चन्दामामा" के हित में, पाठकों को ऐसी कोई रचना नहीं भेजनी चाहिये, जो अन्यत्र या "चन्दामामा" प्रकाशित हो चुकी हो।

वर्ष : ९ अक्तूबर १९५७ अंक : २

मुख - चित्र

अगले दिन सवेरे कीचक ने विराट राजा के अन्त:पुर में जाकर द्रौपदी से कहा—"इस मत्स्य देश में मेरा मुक़ाबला करनेवाला कोई नहीं है। मैं तुझे अपनी बड़ी रानी बनाऊँगा। मेरी पत्नियाँ तेरी दासी होकर रहेंगी।" द्रौपदी ने कहा—"तुम बलवान हो। परन्तु यह बात मेरे गन्धर्व पतियों को पता लग गई तो मुझ पर आफ़त आ पड़ेगी। अगर रात को तुम नर्तनशाला में आये, तो मैं वहाँ तुम्हारी राह देखूँगी। यह किसी को न पता लगे।"

कीचक ने इतने से तसल्ली कर ली। द्रौपदी ने इस समझौते के बारे में भीम से कहा। अन्धेरा होने के बाद, भीम नर्तनशाला में, अकेला एक शय्या पर कम्बल ओढ़कर लेट गया। कीचक आया। उसने सोचा कि सैरन्ध्री ही लेटी हुई थी। उसने उस पर हाथ रखा। तुरत भीम शेर की तरह उठा। उस अन्धकार में, दोनों मस्त हाथियों की तरह लड़े। आख़िर भीम ने कीचक को मार दिया। द्रौपदी को उसकी लाश, दिये की रोशनी में दिखाकर भीम ने कहा—"देख....तुझ पर आँख उठानेवाले दुष्ट की क्या गति हुई है!" वह यह कह कर पाकशाला में चला गया। तब द्रौपदी ने नर्तनशाला के रक्षकों को बुलाकर कहा—"मेरे पति गन्धर्व ने कीचक का चित्रवध कर दिया है। शव नर्तनशाला में है। "उन्होंने यह बात जाकर राजमहल में कही।

कीचक की मृत्यु का समाचार सुनते ही एक सौ पाँच उपकीचकों ने, वहाँ खड़ी द्रौपदी को देखकर कहा—"कीचक इसी के कारण मरा है। इसे भी उसके साथ जलायें।" उसे भी वे श्मशान की ओर ले गये। द्रौपदी अपने पतियों को पुकारने लगी। भीम वेश बदलकर गया। रास्ते में एक पेड़ उखाड़कर, उसने उन उपकीचकों का काम तमाम कर दिया।

सैरन्ध्री के अन्त:पुर में आते ही, रानी सुधेष्णा ने कहा—"सैरन्ध्री! अब तुम चली जाओ।" "मुझे तेरह दिन की अवधि दीजिये। उसके बाद, मेरे पति मुझे ले जायेंगे।" द्रौपदी ने कहा।

स्वाद के लिये जान खोई

समुद्र राज्य पर छे बड़ी मछलियाँ राज्य करती थीं। उनमें से एक मछली का नाम आनन्द था। रोज़ दूसरी मछलियाँ आनन्द को देखने आतीं।

एक दिन आनन्द कुछ खा रहा था तो उसे कोई चीज़ बड़ी स्वादिष्ट लगी। जब उसने ध्यान से देखा, तो वह एक छोटी मछली थी। उस दिन से वह मछलियों को खाने लगा। जब उसे और मछलियाँ देखने आतीं तो वह पीछे की मछली को पकड़कर खा जाता।

एक योगी मछली ने देखा कि उनकी संख्या दिन प्रति दिन घटती जाती थी। एक दिन वह आनन्द के कान में छुप गया। राजा को अन्तिम मछली पकड़कर खाता देख उसने यह बात सारी मछलियों को बता दी। दूसरी मछलियाँ उसके बाद आनन्द को देखने न गईं। समुद्र की तह में एक पहाड़ में छुप-छुपा गईं।

आनन्द को भी मालूम हो गया। तुरत वह पहाड़ के पास गया और अपने विशाल शरीर से उस पहाड़ को घेरना शुरू किया। आनन्द ने सोचा, मछलियाँ बाहर आयेंगी और वह तब उन्हें खा सकेगा। थोड़ी देर में उसकी पूँछ उसके सिर के पास आ गई। उसे देखकर आनन्द को भ्रम हुआ कि वह कोई मछली है। उसने उसे अपने दान्तों से काटा। तब आनन्द को बड़ा दर्द हुआ। पानी को खून से रंगा पाकर, मछलियाँ बाहर निकलीं, और आनन्द की कटी हुई पूँछ को खाने लगीं। शरीर बड़ा था। दर्द भी अधिक थी। आनन्द उन्हें न रोक सका। मछलियों ने आनन्द को हजम कर लिया।

विश्वास-घात

तब ब्रह्मदत्त काशी का राजा था। पाँच सौ व्यापारी नौका में समुद्र में यात्रा कर रहे थे कि वह नौका डूब गई। सिवाय एक के, जितने भी नौका में थे, वे मछलियों के शिकार हो गये। बचा हुआ, आदमी, समुद्र तटवर्ती करम्बिय नगर में पहुँचा और वहाँ भीख माँगने लगा।

वहाँ की जनता को उसकी बुरी हालत देखकर दया आई। उन्होंने उसको हर तरह की चीज़ें देनी चाहीं। "ये सब मेरे लिए क्यों? थोड़ा-सा भोजन, और पहिनने के लिए कपड़ा मिल जाये तो काफ़ी है।"—उसने कहा। यह देख लोगों ने सोचा—"ओहो! यह कोई बड़ा तपस्वी है।" उन्होंने उसके लिए एक पर्णशाला बनवाई और उसमें उसको तपस्या करने के लिए कहा।

वह उसमें तपस्या करता रहा। वह करम्बिय महामुनि के नाम से मशहूर भी हो गया। उसकी कीर्ति दूर दूर तक पहुँची। उसके दर्शन के लिए राजा-महाराजा भी आने लगे। इस तरह आये हुए लोगों में, साँपों के राजा पंडरक और गरुड़ों के राजा के रूप में पैदा हुये बोधिसत्व, उसके विशेष स्नेहपात्र थे।

एक दिन, गरुड़ राजा ने, करम्बिय को प्रणाम कर, उसके पास बैठकर कहा—"जब कभी साँप और गरुड़ों में युद्ध होता है तो अक्सर साँपों की अपेक्षा गरुड़ ही अधिक मारे जाते हैं। शायद हम यह नहीं जानते कि साँपों को कैसे पकड़ना चाहिये। ज़रूर इसमें कोई रहस्य है। क्या आप यह रहस्य साँपों से मालूम करके हमें बता सकेंगे?"

करम्बिय यह करने के लिए मान गया। गरुड़ राजा चला गया। जब बाद में सर्पराज उसके दर्शन के लिए आया तो करम्बिय ने उससे पूछा—"राजा! सुना है, गरुड़ तुम्हें पकड़ते ही मर जाते हैं। इसका क्या कारण है? शायद उनको आप लोगों को पकड़ना नहीं आता। कैसे पकड़ जायें कि आपके सर्प झुक जायें!"

सर्पराज ने विनयपूर्वक इसका उत्तर यों दिया—"स्वामी, यह हमारा भेद है। यदि यह भेद मैने बता दिया तो मैं अपनी सारी जाति को धोखा दे रहा हूँगा। उनके नाश का कारण बन रहा होऊँगा।"

"यह क्या? क्या तुम यह सन्देह कर रहे हो कि मैं यह भेद किसी और को बता दूँगा। यह कभी नहीं होगा। मैं सिर्फ यह जानने के लिए पूछ रहा हूँ कि वह रहस्य है क्या। मुझे बता देने से कोई हानि न होगी।" करम्बिय ने कहा।

सर्पराज ने यह कहकर कि वह भेद बता देगा, उनसे आज्ञा लेकर चला गया। जब वह अगले दिन दर्शन के लिए गया तो करम्बिय ने फिर पूछा, किन्तु

सर्पराज ने भेद न बताया। जब वह तीसरी बार आया, तो करम्भिय ने पूछा—"आज तीसरी बार पूछ रहा हूँ, बताओ क्या भेद है? क्यों नहीं बताते?"

सर्पराज ने कहा—"स्वामी! मुझे यह डर लग रहा है कि आप यह भेद किसी और को बता देंगे।"

"मैं यह कभी न करूँगा। शपथ करता हूँ कि नहीं बताऊँगा।" करम्भिय ने कहा।

उसके शपथ करने पर, सर्पराज ने अपना रहस्य इस तरह बताया—

"हम, बड़े बड़े पत्थर निगलकर, अपने शरीर को अधिक वज़नदार बनाकर पड़े रहते हैं। जब गरुड़ हमारे पास आते हैं तो हम मुख खोलकर उनसे भिड़ जाते हैं। गरुड़ हमारे सिर पकड़कर हवा में उड़ते हैं। हमारे वज़न के ढोने के कारण, उनके शरीर का पानी ऊपर आ जाता है। इस कारण वे मर जाते हैं। अगर वे मूर्ख गरुड़, हमारे सिर की अपेक्षा पूछ पकड़कर उड़ें तो हमारे मुख से पत्थर निकल पड़ेंगे, हमारा वज़न कम हो जायेगा और वे हमें उड़ाकर ले जा सकेंगे। यही हमारा रहस्य है।"

सर्पराज के चले जाने के बाद गरुड़ राजा ने आकर करम्भिय मुनि से पूछा—"स्वामी! क्या आपने सर्पराज से रहस्य मालूम कर लिया है!" करम्भिय ने सर्पराज का बताया हुआ रहस्य, गरुड़ राजा को बता दिया।

"इस सर्पराज ने बहुत अन्याय किया है। उसे ऐसा कोई रहस्य किसी दूसरे को नहीं बताना चाहिये था, जिसके कारण, सारी जाति के विनाश की आशंका हो। मैं अभी जाकर उसे पकड़ता हूँ।" पँख फड़फड़ाते, तूफ़ान-सा उड़ाते, वह

सर्पराज की पूँछ पकड़कर आकाश में उड़ गया।

सर्पराज, पूँछ के बल तो लटक ही रहा था। इसलिए मुख से पत्थर नीचे गिर गये। उसने दुख से कहा—"अरे, मैंने अपनी मौत खुद ही मोल ले ली। उसे मैंने महामुनि समझा था। उसकी बातों में आ गया और भेद बता दिया।"

यह सुन गरुड़ राजा ने कहा—"मूर्ख! अपना रहस्य उस ढोंगी सन्यासी को बताकर क्यों दुख करता है? मौत से कोई नहीं बचता। पर प्रधान धर्म विवेक है। तेरी दुर्गति का कारण मैं नहीं हूँ, न सन्यासी है। तेरा अविवेक ही है। प्राणी के लिए, माँ-बाप से बढ़कर कोई प्रेम-पात्र नहीं है। वैसे माँ-बाप को भी अपना रहस्य न बताओ। कितने ही बन्धु-बान्धव होते हैं, मित्र होते हैं, रूपवती भार्या होती है, उनसे भी नहीं कहना चाहिये। जो अपना रहस्य रख सकता है, वह ही शत्रु को दूर रख सकता है।"

"महात्मा! मैं आपका उपदेश समझ गया हूँ। माँ जिस तरह अपनी सन्तान पर दया दिखाती है, उस तरह मुझपर भी

आप दिखाइये।" सर्पराज ने गरुड़ राजा से प्रार्थना की।

"पुत्र तीन प्रकार के हैं। शिष्य, पोषित और गर्भ-पुत्र। उनमें तुम शिष्य हो, इसलिये पुत्र हो। मैं तुम्हारे प्राण छोड़ देता हूँ।" कहते हुये गरुड़ राजा ने सर्पराज को ज़मीन पर छोड़ दिया।

सर्पराज नागलोक में गया। गरुड़ राज ने अपने लोक में जाकर गरुड़ों से कहा—"सर्पराज पंडरक से मैंने मैत्री कर ली है। परन्तु मैं यह जानना चाहता हूँ कि उसके मेरे प्रति क्या भाव है!" यह कहकर

वह फिर नागलोक में गया और उसने अपने पंखों के फड़फड़ाहट से प्रभंजन तैयार कर दिया। तुरत, सर्पराज, पत्थर और रेत निगलकर, पूँछ को छुपाकर फुंकारने लगा।

तब गरुड़ राजा ने उसके पास जाकर आश्चर्य से कहा—"यह क्या सर्पराज! हमने तो सन्धि कर ली थी न? फिर मुझे मारने के लिए क्यों तैयार हो रहे हो!"

तब सर्पराज ने कहा—"मित्र! विवेकी को किसी का विश्वास नहीं करना चाहिये और फिर तुम तो कल तक शत्रु ही थे। कैसे विश्वास करूँ!"

गरुड़ राजा ने कहा—"तुम मेरा पाठ ही मुझे सिखा रहे हो। चल, उस ढोंगी, चोर सन्यासी को देखकर आयें।"

दोनों मिलकर करम्बिय की पर्णशाला में गये। सर्पराज ने करम्बिय को देखकर कहा—"तुझे बड़ा मुनि जानकर मैंने तुझे रहस्य बताया और तूने गरुड़ राजा को बता दिया। तूने विश्वासघात क्यों किया?"

"मैंने अनजाने वह काम नहीं किया है। यद्यपि तुम दोनों मेरे मित्र हो, पर मुझे गरुड़ राजा पर अधिक अभिमान है। इसलिये मैंने तेरा रहस्य गरुड़ राजा को बता दिया।" करम्बिय ने कहा।

"छी! नीच कहीं का! सब कुछ छोड़कर, यदि पक्षपात की भावना, शत्रु-मित्र का भेद न गया, तो क्या पाया? तुम भी कोई मुनि हो? तुम क्योंकि संसार को धोखा दे रहे हो, इसलिये तुम्हारे सिर के सात टुकड़े हो जायें!" सर्पराज ने करम्बिय को शाप दिया।

तुरत करम्बिय के सिर के सात टुकड़े हो गये। उसके नीचे की भूमि फट गई। वह सीधे नरक को चला गया। सर्पराज और गरुड़ राजा अपने लोक चले गये।

[९]

[महामायावी के पास से महाशक्ति वाली वस्तुओं को पिंगल के लेते ही, भल्लूक पर्वत की दुष्ट शक्तियों ने सिर उठाया। पद्मपाद ने पिंगल को, भल्लूककेतु के पास भेजा। वह उसको ले आया। तब, पिशाच भल्लूक केतु के पास भागे भागे आये।]

भूतों को अपने पास दौड़कर आता देख, पद्मपाद मुस्कराया। मगर भल्लूक केतु ने उन्हे देखना न चाहा। उसने एक तरफ़ मुड़कर, पिंगल को नमस्ते करते हुए कहा—"प्रभु, मैं इन क्षुद्र प्राणियों का नेता नहीं हो सकता। कृपा करके मुझे आप अपने साथ ले जाइये।"

पिंगल ने कोई जवाब न दिया। पद्मपाद ने भल्लूक केतु का कन्धा थपथपाते हुए कहा—"भल्लूककेतु, तेरे लिए इस पर्वत प्रान्त के राक्षसों पर शासन करते जीवन व्यापन करना श्रेयस्कर है, यह मेरा ख्याल है।"

"प्रभु, मैं अब यह जीवन नहीं चाहता।" कहते हुए भल्लूक केतु पद्मपाद के पैरों पड़ गया।

इस बीच, पिशाच, उनको चारों ओर से घेर कर चिल्लाने लगे—"भल्लूक केतु हमारा राजा है। होय, होय।" उनके कर्ण कठोर शोर को सुन, पिंगल झुंझलाने

लगा। उसने कहा—"पद्मपाद, मुझे एक तरतीब सूझ रही है। अगर हमने वह काम किया, तो हमारी समस्या बड़ी आसानी से हल हो जायेगी, और साथ साथ भल्लूक केतु की भी।"

"वह क्या है?"
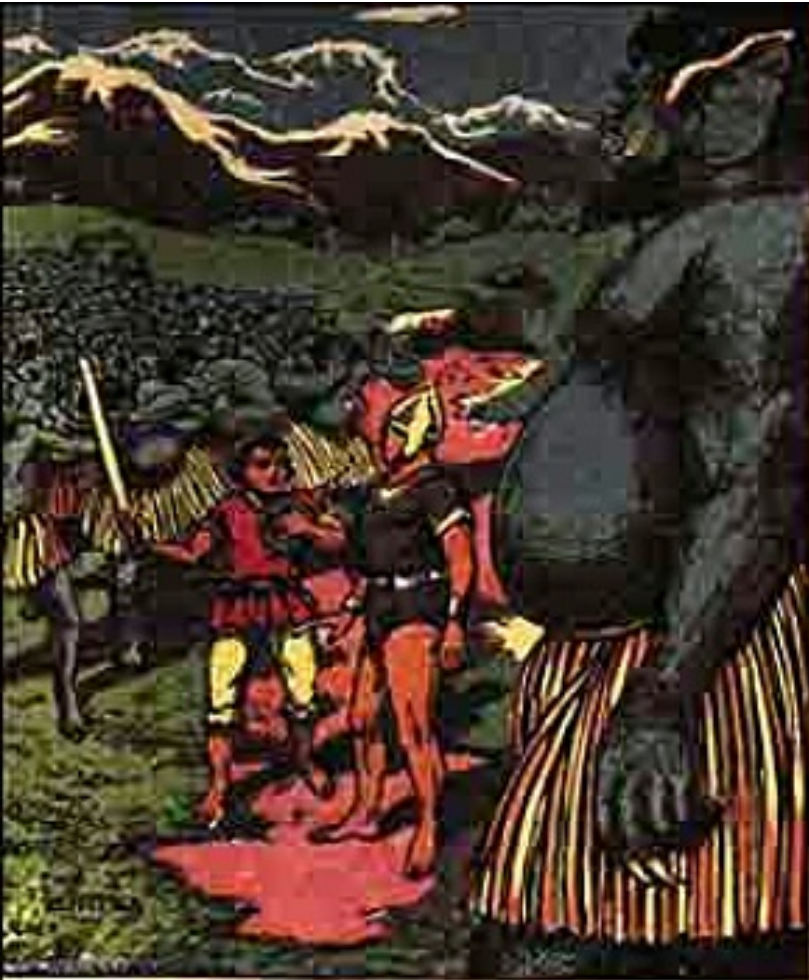
"भल्लूक केतु, हमारी सेवा करता जीना चाहता है। इसीलिये वह इस पहाड़ी इलाके में नहीं रहना चाहता है। राक्षसों को छोड़ दिया, तो जाने क्या क्या क्रूर कार्य ये करें। यही अच्छा है कि इनका नामो निशान मिटा दिया जाय। आओ,....हम इन पर महामायावी की तलवार का उपयोग करें।" पिंगल ने कहा।

पिंगल के यह कहते ही, पिशाच हाहाकार करने लगे। उन सब ने एक स्वर में कहा—"महामांत्रिको! आप हमारा सर्वनाश न कीजिये। यदि हमारा राजा भल्लूक केतु हम लोगों का सरदार नहीं होना चाहता, तो हम अपना नेता अपने आप चुन लेंगे।"

"मुझे इस पर कोई आपत्ति नहीं है। तुम यह काम कर दिखाओ। तुम अपने नेता-निर्वाचन समस्या का कैसे हल ढूँढ़ निकालते हो, यह देखने की मेरी भी इच्छा है।" पद्मपाद ने कहा।

"आप मनुष्यों में जैसे कि बलवान और शक्तिवान ही नेता बनता है, वैसे ही हम में भी होता है। ये शक्तियाँ किसमें अधिक हैं, हम देख लेंगे।" कहते कहते, पिशाच, खुल्लम खुल्ला मुका-मुकी के लिए तैयार होने लगे।

"शाबाश, यह तरीका बहुत अच्छा है।" कह कर, पिंगल ने जोश के साथ तालियाँ पीटीं।

राक्षसों में नेतृत्व के लिए धक्कम पेल शुरु हो गई। वह निरन्तर नया रंग बदलती गई। आखिर युद्ध-सा शुरू हुआ। अगर कुछ ने शेर के रूप में बदले राक्षसों का मुकाबिला करने के लिए हाथी का रूप धारण किया तो कई उनका नाश करने के लिए, शेर की आकृति में परिवर्तित हो गये। फिर कुछ पिशाच देखते देखते नाग बन गये तो कुछ गरुड।

इस प्रकार के घोर युद्ध के बाद, जो बचे उन्होंने, आखिर एक भूत को नेता चुना। पद्मपाद को नेता का यह निर्वाचन देख बड़ी खुशी हुई। उसने पिशाचों के नेता भूत को आशीर्वाद देते हुए कहा—"अब तुम स्वेच्छापूर्वक इस भल्लूक पर्वत में रह सकते हो। हम तुम्हें आश्वासन देते हैं कि न मैं, न पिंगल तुम पर हाथ उठायेंगे, अगर तुम सबने शान्तिपूर्वक जीवन व्यतीत किया, और मनुष्यों पर आक्रमण न किया। मेरी बात सच मानो। अपने इस निर्णय को मैं नहीं बदलूँगा।"

पिशाचों ने जयजयकार किया। वे अपने नेता को कंधों पर उठाकर, पर्वतों पर चले गये। तब पद्मपाद ने पिंगल की ओर मुड़कर कहा—"पिंगल, अब हमने नाना कष्ट सहकर आवश्यक शक्तियों को पा लिया है। अब हमें कोई डर नहीं है। इस बारे में जो तुमने सहायता की है, उसे मैं कभी न भूल सकूँगा।"

मेरी यह इच्छा है कि तुम अपने घर जाने से पहिले मेरे घर कुछ दिन मेहमान बनकर रहो।"

पिंगल यह मान गया। पद्मपाद ने चुटकी भर मिट्टी लेकर, कुछ मन्त्र पढ़कर, नीचे फेंक दी। तुरत, रेंकते रेंकते गधे रूपी पिशाच, भूमि को फोड़कर बाहर निकले।

पद्मपाद एक गधे पर चढ़कर बैठ गया। पिंगल दूसरे गधे पर चढ़ने जा रहा था कि भल्लूक केतु ने उसके आगे बढ़कर कहा—"प्रभु, आप मेरे कन्धों पर चढ़िये। मैं हमेशा आप का सेवक हूँ।"

पिंगल हँसता, भल्लूक केतु के कन्धों पर चढ़ गया। जिस गधे पर पद्मपाद बैठा था, वह आकाश में उड़ा। उसके साथ भल्लूक केतु भी उड़ा। बिना सवार के ही, दूसरा गधा भी उनके साथ उड़ने लगा।

जंगल, पहाड, नदी, नाले पार करते सूर्यास्त के समय, वे एक नगर के पास पहुँचे। पद्मपाद ने, नीचे के खिलौनों-से, नगर के मकानों को दिखाते हुए कहा—"उस पहाड़ के पास एक नाला बहता दिखाई देता है न! उसके पास तुम वह पेड़ों का झुरमुट देखो। उसमें जो संगमरमर का चमकता घर दिखाई देता है, वह मेरा पितृ गृह है। क्योंकि मेरे दोनों भाई तोते झील में मर गये हैं, इसलिये मैं ही अब उसका मालिक हूँ। मेरे पिता का छोड़ा हुआ मन्त्र ग्रन्थ भी मेरा ही है।

इतने में पद्मपाद का पिशाच गर्दभ धीमे धीमे उतर कर, घर की चारदिवारी के

ऊपर जाकर खड़ा हो गया। भल्लूक केतु भी नीचे उतरा। चारदिवारी के बड़े फाटक पर दो नीग्रो गुलाम पहरा दे रहे थे। उन्होंने पद्मपाद को देखते ही, अपने हाथ में भाले ऊपर उठाकर कहा—"जय पद्मपाद।" वे जयजयकार करने लगे।

पद्मपाद गधे से उतरकर आगे बढ़ा। पिंगल भी भल्लूक केतु के कन्धों पर से उतरकर उसके पीछे चलने लगा। तरह तरह के वृक्षों को देखते हुए, जब घर की सीढ़ियों के पास सब पहुँचे तो उन्हें सफ़ेद दाढ़ीवाला एक वृद्ध दिखाई दिया। पद्मपाद ने उसे देखकर, झुक कर प्रणाम किया। उसने पीछे मुड़कर पिंगल से कहा—"ये ही मेरे पिता के गुरु हैं! पिंगल ने भी उनको नमस्कार किया।

वृद्ध ने सबके आने तक वहाँ प्रतीक्षा की। फिर उसने पिंगल की ओर अंगुली दिखाते हुए पूछा—"पद्मपाद! यह नवयुवक कौन है?" थोड़ी देर रुक कर उसने कहा—"कहीं, यह अवन्तीपुर का मछियारा तो नहीं है?"

पद्मपाद ने सिर हिलाकर बताया कि यह वही था। तुरत वृद्ध ने परमानन्द के साथ

"मेरे पिता का छोड़ा हुआ मन्त्रग्रन्थ अब मेरा ही है न ?" पद्मपाद ने पूछा।"

वृद्ध ने मुस्कराकर कहा—"जब तुम्हारे पास संसार को जीत सकने वाली शक्तियाँ हैं, तब उस मन्त्रग्रन्थ में ऐसी कौन सी बात होगी, जिससे तुम्हारा फ़ायदा होगा ! जो शक्तियाँ तूने पाई हैं, उससे बढ़कर शक्तियाँ उसमें कोई नहीं हैं। क्योंकि जो वह खुद न कर सकता था, वह अपने लड़कों से करवाना चाहता था इसलिये तुम्हारे पिता ने वैसी शर्तें रखी थीं। महामायावी, तुम्हारे पिता का जानी दुश्मन था। अब तुमने उसको जीत लिया है।"

कहा—"तो तुमने, महामायावी की समाधि में रखी उन सब शक्तियों को पा लिया है।"

पद्मपाद ने कुछ न कहा। किन्तु उसने अपने हाथ की अंगूठी, हीरों से जड़ी तलवार और भूगोल को, बूढ़े को दिखाया। वृद्ध ने उन्हें कुछ देर तक गौर से देखने के बाद कहा—"पद्मपाद अब तुम से बढ़कर इस संसार में कोई मान्त्रिक नहीं है। तुमने वह चीज़ पाई है, जो तुम्हारा पिता बहुत कोशिश करके भी न पा सका। इस प्रकार उसकी आत्मा को शान्ति पहुँचेगी।"

वृद्ध ने जब तक सब कुछ सुना न दिया, तब तक पद्मपाद अपने पिता का उद्देश्य न समझ सका। यानी, अपने जानी दुश्मन महामायावी को निश्शक्त करने के लिए उन्होंने मेरा उपयोग किया था, उसने सोचा।

पद्मपाद इसी उलटफेर में था कि वृद्ध ने पिंगल का कन्धा सहलाते हुए कहा—"तू अवन्तीपुर का मछियारा है। यह भाग्य का कुछ ऐसा खेल था कि तुम पद्मपाद

को मिले और तुम दोनों मिलकर यह महान कार्य सम्पन्न कर सके। मैं इसलिये तुम्हारा अभिनन्दन करता हूँ।"

पिंगल, पद्मपाद का सप्ताह भर अतिथि रहा। वह वापिसी यात्रा के लिए तैयार हो गया। पद्मपाद ने उसको कीमती पोशाकों के साथ, बहुत-सा सोना, हीरे, मणि वगैरह, भेंट में दिये। पिंगल ने कृतज्ञतापूर्वक उन्हें स्वीकार किया।

जब पिंगल चारदिवारी पार करके जा रहा था तो पद्मपाद ने, महामायावी की समाधि से लाये हुए वस्तुओं को दिखाते हुए पूछा—"पिंगल, उनमें से जो तुम चाहो, ले लो। मैं खुशी खुशी दे दूँगा।"

पिंगल इसके लिए न माना। उसने मुस्कराते हुए कहा—"पद्मपाद! ये महान शक्तिवाली चीज़ें, मुझ मछियारे की अपेक्षा, तुम्हारे जैसे मन्त्रवेत्ता के हाथ में अधिक सफल होंगी। अगर तुम बुरा न मानो तो तुम्हारे पास एक चीज़ है, जो मैं चाहता हूँ।"

"वह क्या है, निस्संदेह माँगो।" पद्मपाद ने कहा।

"तुम्हारे पास जादूवाली एक थैली है न! बिना पकाये ही, उसमें सब प्रकार की खाने की चीज़ें मिलती हैं। अगर ऐसी कोई चीज़ मेरे हाथ में रही तो मेरी बूढ़ी माँ को चूल्हा जलाने की तकलीफ़ न होगी। वह बड़ी खुश होगी।"

पद्मपाद ने, पिंगल की इच्छा के अनुसार वह थैली उसे दे दी। फिर पिंगल, वृद्ध मन्त्रवेता, और पद्मपाद से आज्ञा लेकर, भल्लूक केतु के कँधों पर चढ़कर आकाश मार्ग से निकल पड़ा।

मल्लूक केतु, मेघावृत आकाश में उड़ता, ठीक कड़ी दुपहरी में, अवन्ती नगर के पास पहुँचा। उस नगर के बाहर अपनी झोंपड़ी को देखकर वह चौंका। उसने मल्लूक केतु का कन्धा थपथपाते हुए कहा—"मल्लूक, अब तुम बिना आगे उड़े, ठीक वहाँ उतरो, जहाँ पेड़ दिखाई दे रहे हैं।"

मल्लूक केतु, पिंगल की आज्ञानुसार, अवन्ती नगर के बाहर, पेड़ों के झुरमुट के बीच उतरा। पिंगल ने उसके कंधों पर से उतरकर नगर की ओर देखते हुए कहा। "मल्लूक, अगर मैं तुम्हें इस रूप में नगर में ले गया, तो बहुत-सारी समस्यायें पैदा होंगी। अब क्या किया जाय!"

पिंगल के भय का अर्थ समझकर मल्लूक केतु ने खूब ज़ोर से हँसकर कहा—"प्रभु! तो आप अकेले ही नगर में जाइये। जब आपको मेरी सहायता की ज़रूरत हो तब यह मन्त्र पढ़िये। मैं तुरत आपके सामने हाज़िर हो जाऊँगा।" वह पिंगल के कान में कोई मन्त्र बताकर, अदृश्य हो गया।

पिंगल, पद्मपाद की दी हुई भेंटों को ढोता अपने घर की ओर चला। जब थोड़ी देर बाद वह घर के पास पहुँचा तो उसे अपनी माँ दिखाई दी। वह सूखकर काँटा हो चुकी थी। उसने काँपती आवाज़ में कहा—"दाताओ, इस बुढ़िया को भी कुछ देते जाइये। भूख के मारे मरी जा रही हूँ।" वह बिचारी हाथ पसारे बैठी थी। पिंगल ने यह देखा।

पिंगल पर बिजली-सी गिरी। उसने अपने दुख को काबू में करते हुए कहा—"माँ, तुम पर यह नौबत कैसे आई!" वह यह कहता माँ की ओर दौड़ा।

(अभी और है)

मछियारे का भाग्य

खलीफ़ा ने पूछा ही था कि मछुआ काँपता काँपता कुछ गुनगुनाने लगा।

"पीने के लिए थोड़ा पानी दे सकोगे?" खलीफ़ा ने पूछा।

"तुम पागल हो या अन्धे? इस टीले के पीछे ही तो टिग्रिस बह रही है" मछियारे ने कहा। खलीफ़ा ने, घोड़े पर सवार होकर टीले की परिक्रमा की। वह जान गया कि सचमुच वहाँ नदी थी। उसने घोड़े को पानी पिलाया, खुद पिया। वापिस आकर उसने मछियारे से पूछा—"भाई, तुम यहाँ क्या कर रहे हो? तुम्हारा पेशा क्या है?"

"यह सवाल बिल्कुल बेअक़्ली का है! मैंने शरीर पर जाल लपेट रखा है। क्या तुम इससे अन्दाज नहीं लगा सकते कि मेरा पेशा क्या है?" मछियारे ने पूछा।

"ओहो, तो तुम मछियारे हो? तुम्हारे कपड़े कहाँ है?" खलीफ़ा ने पूछा।

उसके यह प्रश्न पूछने पर, मछियारे को सन्देह हुआ कि उसी ने उसके कपड़े ले लिए होंगे। एक कदम आगे कूदकर उसने झट घोड़े का लगाम पकड़ लिया। "तुम मजाक फिर करना, पहिले मेरे कपड़े वापिस कर दो।" मछियारा जोर से चिल्लाया।

"खुदा की कसम! मुझे तेरे कपड़ों के बारे में कुछ नहीं मालूम है। मैं तुम्हारी बातें समझ नहीं पा रहा हूँ।" खलीफ़ा ने कहा।

खलीफ़ा का छोटा मुख था, और बड़े गाल। उन्हें देख, मछियारे ने सोचा कि वह कोई शहनाई बजानेवाला होगा।

"अरे, बाजा बजानेवाले, अगर तुने मेरे कपड़े न दिये, तो मैं मोटे डंडे से तेरी मरम्मत कर दूँगा। ख़बरदार!" मछियारे ने कहा।

श्री रामलाल

"दस दीनारें।" खलीफ़ा ने जवाब दिया।

"बस इतना ही! मैं भी रोज़ दस दीनारें कमाता हूँ। मुझसे मछली पकड़ना क्या सीखोगे? तुम्हें कमाई का अच्छा रास्ता दिखाऊँगा। अगर तेरे मालिक ने कुछ चूँ चा की, तो इस लट्ठ से उसका सिर तोड़ दूँगा।" मछियारे ने खलीफ़ा से कहा।

"हाँ, मुझे यह पसन्द है।" खलीफ़ा ने कहा।

"....तो आ, उस गधे पर से उतर। अभी काम शुरू किया जाय।" मछियारे ने कहा।

उसका डंडा देखकर खलीफ़ा घबराया। उसने अपना मखमल का अंगरखा निकाल कर मछियारे को देते हुये कहा—"तुम अपने कपड़ों के बदले इन्हे ले लो।"

"मेरे कपड़े इनसे दस गुने अधिक कीमती थे। फिर ये इतने लम्बे क्यों हैं?" कहते हुये उसने अपना मछली काटनेवाला चाकू निकाला, और अंगरखे को घुटने तक काट दिया, और उसे पहिन लिया।

"देखो भाई, शहनाई बजाकर तुम रोज कितना कमाते हो?" उसने खलीफ़ा से पूछा।

खलीफ़ा ने अपना घोड़ा एक पेड़ से बाँधा। मछियारे के साथ नदी के पास गया।

"यह देखो, इस जाल को इस तरह पकड़ो—इस तरह इसे हाथ पर आने दो, फिर इसे पानी में डालो।" मछियारे ने खलीफ़ा को जाल फेंकना सिखाया। खलीफ़ा ने पूरा ज़ोर लगाकर जाल फेंका, फिर एक क्षण रुककर, जाल खींचने लगा। क्योंकि वह बहुत भारी था, उसने मछियारे की मदद माँगी।

"तुम भी अच्छे धूर्त हो। मैंने अपने कपड़ों के बदले, तेरा पुराना चीथड़ा-सा अंगरखा तो ले लिया, खैर, अगर अब तूने मेरा जाल खराब कर दिया तो तेरा गधा ले लूँगा और तुम्हारी पीठ सीधी कर दूँगा।" मछियारे ने गुस्से से कहा।

जैसे तैसे, दोनों ने मिलकर जाल किनारे तक खींचा। उसमें तरह तरह की मछलियाँ थीं। अनेक रंग की।

"....कोई बात नहीं। मैं तुझे अच्छा मछियारा बना दूँगा। तू बाज़ार जाकर तुरत दो टोकरे ले आ। इन मछलियों को टोकरों में रखकर, उन्हें गधे पर ढोकर, बाजार ले जायेंगे। वहाँ जाकर तेरा काम बस इतना ही है....तराजू पकड़ना और पैसे वसूल करना। उठ, उठ, देरी न कर।" मछियारे ने कहा।

"अच्छा, जी हुज़ूर!" कहता खलीफ़ा घोड़े पर सवार होकर निकल पड़ा। वह अपनी हँसी काबू में न रख सका।

जब वह वापिस आया तो वज़ीर वगैरह, दरबारी उत्कंठापूर्वक उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे।

"लगता है हुज़ूर को कहीं कोई बाग मिल गया। वहीं खूब आराम करके आये हैं।" जाफ़र ने कहा।

खलीफ़ा ने अट्टहास करके, जो कुछ गुजरा था, कह सुनाया। उसे एक मजाक सूझी। उसने दरबारियों की ओर मुड़कर कहा—"नदी किनारे से जो जितनी मछलियाँ लायेगा मैं उसे उतनी दीनारें दूँगा।"

तुरत, खलीफ़ा के दरबारी, टीले की तरफ़ जल्दी जल्दी दौड़े। वे मछियारे खलीफ़ा से लड़-झगड़कर दोनों हाथों में मछलियाँ पकड़कर, वापिस जाने लगे।

"जरूर इन मछलियों में कोई न कोई बात है!" आश्चर्य चकित हो मछियारे ने सोचा। यह सोचकर कि यदि उसने देरी की तो उसके पास एक भी मछली न रहेगी, वह दोनों हाथों में एक एक मछली लेकर नदी में कूद पड़ा।

इस बीच खलीफ़ा के सैनिक, बाकी मछलियों को लेकर खलीफ़ा के पास गये। एक नीग्रो गुलाम सब के बाद नदी किनारे पहुँच सका। उसने नदी में खड़े मछियारे के हाथ में मछलियाँ देखकर कहा—"अरे मछियारे, एक बार इधर तो आ।"

"जा, बे जा चोर कहीं का!" मछियारे ने नीग्रो गुलाम को फटकार बताई।

नीग्रो गुलाम ने पानी के पास आकर कहा—"अगर तूने, मुझे मछलियाँ दीं, तो तुझे मैं अच्छा इनाम दूँगा।" तब भी मछियारे ने उसकी न सुनी। नीग्रो ने अपने हाथ का भाला उस पर फेंकना चाहा। तब मछियारे ने कहा—"मैं इन कम्बख्त मछलियों के लिए नहीं मरना चाहता हूँ।" उसने अपने हाथ में रखी मछलियों को किनारे पर फेंक दिया। नीग्रो ने उन्हें उठाकर अपने रूमाल में बाँध

लिया। उसे इनाम देने के लिए उसने अपनी जेबें टटोली पर जेब में कानी कौड़ी भी न थी।

"अरे भाई, आज तुम्हारी किस्मत अच्छी नहीं है। कल खलीफ़ा के महल में आकर मेरे बारे में पूछना। मेरा नाम सँडाल है। मैं तुम्हारी आवभगत करूँगा, और अच्छा इनाम भी दूँगा।" नीग्रो गुलाम घोड़े पर सवार होकर चला गया।

"आज भी क्या खराब दिन है!" यह सोचता सोचता, वह जाल सिर पर रखकर घर की ओर चला।

जब टिग्रिस नदी के किनारे यह नाटक हो रहा था, तब खलीफ़ा के अन्त:पुर में भी एक नाटक चल रहा था। वह बड़ा भयंकर था।

खलीफ़ा के दरबारियों के साथ शिकार खेलने के लिए जाने के बाद, जुबेदा ने एक दावत दी, उसमें कुतल कुलुब को भी बुलाया। उसने उसके प्रति आदर-सम्मान का प्रदर्शन किया। उसके मनोरंजन के लिए गाना गवाया। फिर कुछ मिठाइयाँ मँगाकर उसने कुतल कुलुब को खाने के लिए कहा। उस मासूम स्त्री ने, मुख में

मिठाई रखी ही थी कि वह बेहोश हो गई। क्योंकि उन मिठाइयों में जुबेदा ने कोई ज़हर मिलवा दिया था।

तुरत जुबेदा की नौकरानियों ने कुतुल कुलुब को एक सन्दूक में बन्द करके ताला लगा दिया। फिर उसने यह घोषणा करवाई कि भोजन करते करते हृदय की धड़कन के बन्द हो जाने के कारण कुतल कुलुब की मृत्यु हो गयी। उसको तभी तभी गाड़ दिया गया और उसकी कब्र भी चिन दी गई। उसने सचमुच, अपने बगीचे में एक जगह संगमरमर की मजार भी बनवादी। पर कुतल कुलुब, जुबेदा, के कमरे में, एक सन्दूक में बन्द थी।

खलीफ़ा के वापस आते आते मजार भी पूरी तरह बना दी गई। जब उनको मालूम हुआ कि उनकी प्यारी स्त्री मर गयी थी, तो उनके दुःख का ठिकाना न रहा। जबेदा की बनाई हुई मजार पर, एक घंटा बैठकर वे लगातार आँसू बहाते रहे।

जुबेदा की चाल चल गयी। अगले दिन उसने एक गुलाम को बुलाकर कहा—"अरे तू, इस सन्दूक को बाज़ार ले जाकर इसे नीलाम करवा दे। यह किसी से न कहना कि इसमें क्या है। सन्दूक के बेचने के बाद, जो पैसा मिले, उसे गरीब भिखारियों में बाँट देना।"

मछियारा सवेरे उठते ही इनाम पाने के लिए, संडाल से मिलने राजमहल की ओर चला। मुख्य द्वार के पास ही उसे नीग्रो दिखाई दिया। परन्तु नीग्रो ने इनाम देने के लिए जेब में हाथ डाला, तो उस तरफ़ से वजीर जाफ़र गुजरा। नीग्रो को जाफ़र से बहुत देर बातचीत करता देख, मछियारा जल्दी करने लगा।

जाफ़र ने मछियारे को देखकर पूछा—"यह कौन है?"

"कल हम इसी की मछलियाँ ही उठाकर लाये थे।" नीग्रो ने जाफ़र से मछियारे का विस्तार पूर्वक वृत्तान्त सुनाया।

"यह बात है, यह ठीक समय पर आया है। हुजूर इस वक्त बहुत ग़मग़ीन हैं। अगर इसे अन्दर ले गये, तो कम से कम उनका मन बहलाव ही होगा। मैं उनसे कहकर आता हूँ। तब तक तुम इसे जाने मत देना।" जाफ़र ने खलीफ़ा के पास जाकर तुरत मछियारे के बारे में कहा।

यह सुनते ही खलीफ़ा में कुछ जोश-सा आया। "हाँ, हम और वह हिस्सेदार हैं। देखें, अल्लाह हम से उसे क्या दिलवाता है?" खलीफ़ा ने फिर वजीर को हुकुम दिया कि कागज़ के टुकड़ों पर शून्य से लेकर हज़ार तक, छोटी नौकरी से लेकर, खलीफ़ा के पद तक, कोड़े से फाँसी तक, तरह तरह की सजायें स्पष्ट रूप से लिखे।

यह काम ख़तम होने के बाद, वजीर सात परकोटे पार करके मछियारे को खलीफ़ा के पास ले गया। वहाँ का वातावरण देखकर, मछियारे की अक़्ल जाती रही। खलीफ़ा के कमरे में प्रवेश करते समय जाफ़र ने उससे कहा—"अब, तुझे हुजूर के सामने ले जा रहा हूँ। खबरदार!" पर मछियारे की तो अक़्ल ही मारी गयी थी, वह वजीर की बात न समझ सका। परन्तु खलीफ़ा को देखते ही उसकी सारी घबराहट यकायक काफ़ूर हो गयी।

"अरे शहनाई बजानेवाले! तू भी यहाँ है! तुझे टोकरे लाने के लिए भेजा, और तूने वापिस आने का नाम न लिया,

तू भी क्या आदमी है? तेरी वजह से, कल चोर हमारी पकड़ी हुई मछलियों को उठाकर ले गये। इतने से ही मेरा पिंड न छूटा, अब ये दुष्ट मुझे यहाँ पकड़कर लाये हैं। खैर, तुझे इस जेल में कौन लाया है?" खलीफ़ा से मछियारा यों उत्साहपूर्वक पूछताछ करने लगा।

खलीफ़ा ने अपने लिखवाये कागजों को सामने रखते हुए कहा—"इसमें से एक को चुन लो।"

"अरे, कल ही तो मछली पकड़ना सीखा था, और अभी ही ज्योतिष के झँझट में पड़ गये! क्या तुम जमकर कोई भी काम नहीं कर सकते।" मछियारा ने खलीफ़ा को डाँट बताई।

"अरे, मुख बन्द कर, हुजूर के कहे मुताबिक एक कागज़ उठा!" जाफ़र ने मछियारे को धमकाया। मछियारे ने कागज़ उठाया। उसमें "सौ कोड़े" लिखा हुआ था।

फ़ौरन सैनिकों ने उसे पकड़कर सौ कोड़े लगाये।

"इनाम के लिए आये हुए आदमी का कोड़े खाकर जाना अच्छा नहीं। उसे

फिर एक बार अपना भाग्य आजमाने दीजिये।" जाफ़र ने कहा।

मछियारे से एक और कागज़ उठाने के लिए कहा गया। उस पर "शून्य" लिखा था।

"इसका भाग्य भी इसके जैसा ही है। यूँ ही तीसरी बार भी उसे उठाने दीजिये। देखें, क्या होता है!" जाफ़र ने सुझाव दिया।

मछियारे के उठाये हुए तीसरे कागज़ पर लिखा था, "एक दीनार।" उसे एक दीनार दे दी गयी।

"क्या! सौ कोड़ों के लिए एक दीनार! आप सब भी इस अन्याय का फल भुगतेंगे।" मछियारे ने कहा।

यह सुन, खलीफ़ा ठट्ठा मारकर हँसा। जाफ़र उसका हाथ पकड़कर बाहर ले गया। वहाँ नीग्रो ने हँसते हँसते पूछा—"खलीफ़ा ने जो तुझे इनाम दिया है। उसमें से आधा क्या मुझे नहीं दोगे?"

"क्यों नहीं दूँगा! पचास कोड़े और दीनार ले ले।" मछियारे ने खलीफ़ा की दी हुई दीनार को उसपर फेंकते हुए झुंझलाकर कहा।

सन्दूक के पास एक बूढ़ा खड़ा होकर कह रहा था—"सज्जनो! इस सन्दूक में क्या है, किसी को नहीं मालूम है। परन्तु यह सन्दूक जुबेदा बेगम के महल से आया है। इसको पहिले पहल जो खरीदने के लिए तैयार हैं, वे सामने आयें।"

एक व्यापारी ने आकर कहा—"यह तो कोई फ़ायदेवाली चीज़ नहीं मालूम होती फिर भी मैं बीस दीनारें दूँगा।"

"पचास" तुरत एक और ने कहा।

"सौ" एक और चिल्लाया।

"यदि कोई और है, जो इससे अधिक देना चाहते हों, तो सामने आयें, नहीं तो सौ दीनार पर इसे उठा दूँगा।" नीलाम करनेवाले ने कहा।

नीग्रो को मछियारे पर दया आयी। उसने सैनिकों से मछियारे को बुलाकर कहा—"यह ले तेरी दीनार, और जो इनाम मैंने देने का वादा किया था, वह भी लेते जा, ये लो सौ दीनारें। इन्हें ले जाओ, आराम से जिओ।"

सोना देखकर, मछियारा अपने सारे कष्ट भूल गया। हवाई किले बनाता बनाता वह थोड़ी देर में, बड़े बाज़ार में पहुँचा। वहाँ उसे एक जगह भीड़ दिखाई दी। भीड़ को चीरता हुआ वहाँ गया। बीचों बीच, उसने एक सन्दूक पर एक गुलाम को बैठा पाया।"

मछियारे ने जोर से कहा—"एक सौ एक।" बाकी व्यापारी उसे देखकर हँसे। क्योंकि किसी ने उससे अधिक न बोला था। इसलिए वह सन्दूक मछियारे को दे दिया गया। उसने अपने पास की सारी दीनारें, जुबेदा के गुलाम को दे दीं। सन्दूक कन्धे पर रख, गिरता पड़ता, वह घर पहुँचा।

उस सन्दूक में क्या था, मछियारे ने जानना चाहा। उसने उसे खोलने की बहुत कोशिश की, परन्तु वह ताला न खोल सका।

"छी....छी, इतना पैसा फूँककर ऐसा सन्दूक ख़रीदा, जो खोला भी नहीं जा सकता है।" उसने सोचा। आख़िर वह थक गया और उसी सन्दूक पर सो गया।

वह अभी एक घंटा ही सोया था कि उसको सन्दूक में कुछ हिलता मालूम हुआ और उसकी नींद टूट गयी। वह घबराया। सन्दूक पर से दूर कूदा। "इसमें कोई भूत है। अच्छा है कि यह नहीं खुला। नहीं तो वे भूत बाहर आ जाते और मेरी बोटी बोटी काटकर मुझे खा जाते।" उसने सोचा।

फिर सन्दूक में हिलना डुलना और भी बढ़ गया। उसने दिया जलाना चाहा, पर बहुत ढूँढने पर भी वह न मिला। मछियारा दरवाजा खोलकर चिल्लाया— "बचाओ, बचाओ!"

उसका चिल्लाना सुन आस पड़ोस के लोगों की नींद टूटी। उन्होंने दरवाजे में से, खिड़की में से झाँककर पूछा— "क्यों! क्या बात है!"

"भूत....पिशाच! आपकी मेहरबानी, ज़रा दिया और हथौड़ा दीजिये। मेरे घर में भूत आ गये हैं।"

यह सुन सब हँसे। एक ने दिया, और एक और ने हथौड़ा उसे दिया। मछियारा उन्हें लेकर फिर अपने घर में चला गया। हथौड़े की चोट से सन्दूक का ताला टूट गया। दिये की रोशनी में उसने देखा कि उस सन्दूक में एक बहुत ही सुन्दर स्त्री है। उसे तभी तभी थोड़ी थोड़ी होश आ रही थी। अंगड़ाइयां लेती हुई धीमे धीमे आँखें खोल रही थी।

"अरे बाप रे बाप, तुम कौन हो?" मछियारे ने सन्दूक पकड़कर धीमे से पूछा।

उसने आँखें खोलकर पूछा—"तुम कौन हो? मैं कहाँ हूँ?"

"भाई, मैं मछियारा हूँ। मेरा नाम खलीफ़ा है। तुम मेरे ही घर में हो।" उसने कहा।

"क्या यह खलीफ़ा हरून अल रशीद का महल नहीं है?" उस स्त्री ने पूछा।

"वाह वाह! तेरे पर, सिवाय मेरे किसी और का कोई हक़ नहीं है। आज ही मैंने नीलामी में तुझे एक सौ एक दीनारें देकर खरीदा है। खुदा की शुक्से मेरा भाग भी जग गया है।" मछियारे ने कहा।

कुतल कुलुब उसकी बकवास न समझ सकी। उसे भूख सताने लगी। "खाने के लिए कुछ है?" उसने पूछा।

"अरे, खुदा की कसम, घर में खाने के लिए कुछ नहीं है। मैं ही दो तीन दिनों से फ़ाका कर रहा हूँ।" मछियारे ने कहा।

"ख़ैर, पैसा तो है?" उसने पूछा।

"खुदा इस सन्दूक की हिफ़ाजत करे। जो कुछ मेरे पास था, मैंने इस पर खर्च दिया।" उसने कहा।

"मुझे बड़ी भूख लग रही है, किसी के घर जाकर कुछ खाने को ला।" उस स्त्री ने कहा।

मछियारा गली में जाकर चिल्लाने लगा—"देनेवाले दाताओ, पेट भूख से जला जा रहा है। कुछ खाने को दीजिये।"

यह सुन फिर सब की नींद टूटी। उसे कोसते कोसते लोगों ने जो कुछ घर में खाने को था, उसे दे दिया। वह उसे ले जाकर कुतल कुलुब के पास ले गया।

"पहिले मुझे थोड़ा पानी दो, गला सूखा जा रहा है।" कुतल कुलुब ने कहा।

खाली सुराई लेकर मछियारा गली में भागा। फिर उसने अड़ोस पड़ोस के लोगों को जगाया। उसे बुरा भला कहकर, उन्होंने पानी भी दिया।

कुतल कुलुब ने पेट भर खाकर अपनी कहानी मछियारे को सुनायी। आखिर उसने कहा—"कुछ भी हो, तेरी किस्मत अच्छी है। अगर खलीफ़ा को मालूम हो गया कि तूने मेरी जान बचायी है, तो वह तुझे सोने से तुलवायेगा।"

"उसकी बात मुझे न बता। मैं सोचता था कि खलीफ़ा और कोई होगा। पर वह तो वही शहनाई बजानेवाला निकला, जिसने मुझसे मछली पकड़ना सीखा था। चमड़ी जायेगी पर वह दमड़ी न देगा। निरा कंजूस है।" मछियारे ने कहा।

उसकी बात सुनकर कुतल कुलुब ने कहा—"जब तक तुम ये ऊँटपटाँग बातें नहीं छोड़ोगे तब तक नहीं सुधरोगे। अगर ज़िन्दगी बदलनी है, तो पहिले तुम खुद बदलो। तुम्हारे भी अच्छे दिन आनेवाले हैं। अच्छी तरह सोच लो।"

उसके यह कहने से मछियारे के मन में कुछ परिवर्तन-सा हुआ। उसे ऐसा लगा, जैसे किसी ने उसकी जंजीरें खोल दी हों। जिन्दगी में पहिली बार वह दुनियाँ जैसी थी, वैसी उसे देखने लगा।

सवेरे होते ही, कुतल कुलुब ने, इबन अल किर्नास के नाम, एक चिट्ठी लिखकर, मछियारे के द्वारा भेजी। जौहरी ने उसकी चिट्ठी पढ़कर पूछा—"तुम्हारा घर कहाँ है?" मछियारा उसको अपने घर ले गया।

जौहरी ने मछियारे को हज़ार दीनारें दीं। फिर खलीफ़ा के पास यह कहने गया कि कुतल कुलुब जीवित थी।

यह सुन खलीफ़ा बहुत खुश हुआ। उसने इस बार मछियारे खलीफ़ा को बुलाकर, पचास हज़ार दीनारें, घोड़े, दास दासी आदि, दिये।

अब मछियारा खलीफ़ा बड़े घरवाला हो गया। उसने एक बड़ा मकान खरीदा। एक बड़े घराने में शादी भी कर ली। वह खलीफ़ा का अंतरंगिक मित्र बन गया और आराम से ज़िन्दगी बसर करने लगा।

खरगोश

भेड़िये को मारने के और, लोमड़ी को कई बार तंग करने के बाद, खरगोश, जो कोई मिलता, उसके सामने शेखियाँ मारता। घमंड करता।

एक दिन, खरगोश कछुए से कह रहा था—"मैं वायु की गति से भाग सकता हूँ, इसीलिये मैं अपने प्राण कई बार बचा सका। अगर मैं भी तुझ जैसा सुस्त होता, तो जाने क्या होता।"

कछुए ने कहा—"तू क्या मेरे साथ होड़ कर सकता है? अगर तू वायु वेग से जा सकता है, तो मैं मन के वेग से भाग सकता हूँ।"

"अच्छा तो बाजी लगायें! आओ।" दोनों ने सोचा। गिद्ध को निर्णायक निश्चित कर, उन्होंने पांच मील की दौड़ लगानी चाही।

"तू सीधे सड़क पर भाग। मैं जंगल के रास्ते, घूम-घाम कर आऊँगा। और तब भी तुझे हरा दूँगा।" कछुए ने कहा।

एक दिन दौड़ के लिए निश्चित किया गया। जाने क्या हो, यह सोच कर, खरगोश रोज़ सड़क पर भागने का अभ्यास किया करता। कछुआ अपने घर से न हिला। कछुए की पत्नी और तीन बड़े बच्चे थे। सब के सब कछुए की तरह ही थे।

दौड़ के दिन, सवेरा होने से पहिले कछुआ, उसकी पत्नी और लड़के सोकर उठे। कछुए की पत्नी जाकर, पहिले मील के पत्थर पर जाकर बैठ गई। तीनों बच्चे रास्ते में अलग अलग जगह पर खड़े हो गये। कछुआ पाँचवें मील के पत्थर के पास पहुँचा।

दौड़ का समय हो गया। गिद्ध को लेकर खरगोश आया। उसने कछुए की

श्री सुमन कुमार जोशी

पत्नी से कहा—"भाई! तुम तो मुझ से पहिले आ गई हो।"

दौड़ देखने और कई पशु भी आये।

"एक....दो....तीन!" गिद्ध ने ज़ोर से कहा।

"तीन" गिद्ध के कहने की देर थी, खरगोश बाण की तरह दौड़ा।

"मुझे क्या जल्दी है! मैं घूम-फिर कर पहुँचूँगा।" यह कहती कछुए की पत्नी जंगल में घुसी और सीधे घर चली गई।

खरगोश, पहिला मील खतम करने को था, कि उसे पास के झाड़ों से एक कछुआ आता दिखाई दिया। वह कछुए का लड़का था।

खरगोश हैरान रह गया। "अरे! तुम पहिले चले आये!" उसने कहा।

"हाँ! आराम से चला आ रहा हूँ।" कहकर सड़क पार कर वह जंगल में घुसा, और वहाँ से सीधे घर पहुँचा।

खरगोश और तेज़ी से दौड़ा। परन्तु दूसरे मील पर उसे कछुआ दिखाई दिया। वह उससे आगे था।

तीसरे मील और चौथे मील पर भी यही हुआ। पाँचवें मील पर, झाड़ियों में छुपा खरगोश, गिद्ध को आता देख बाहर निकला और आसानी से गम्यस्थान पर पहुँच गया। प्रेक्षकों ने तालियाँ पीटीं।

थोड़ी देर बाद, खरगोश हाँफता हाँफता, पसीना बहाता आया। प्रेक्षकों ने सीटी बजाकर उसका परिहास किया।

"दौड़ में, कछुए की जीत हुई। खरगोश हार गया। इस वजह बाज़ी, कछुए की रही।" गिद्ध ने कहा।

कछुआ अन्याय से जीता हुआ रुपया लेकर घर चला गया और खरगोश को मुँह की खानी पड़ी।

चीन देश के एक महानगर में एक दर्ज़ी रहा करता था। उसका नाम था मुस्तफ़ा। वह बहुत ग़रीब था। दिन भर मेहनत करता, पर इतना न कमा पाता कि बाल-बच्चों का अच्छी तरह पालन-पोषण कर सके।

मुस्तफ़ा के लड़का का नाम था अलादीन। वह निरा आलसी था। उसका जीवन में कोई उद्देश्य न था। माँ-बाप का भी ख्याल न करता। वह सवेरे सवेरे घर से निकल जाता, आलसी साथियों को लेकर, शहर में आवारागर्दी करता।

अलादीन की, जब काम करने की उम्र आयी, तो उसका पिता उसको अपनी दुकान ले गया। उसने उसे सूई से सीना पिरोना सिखाया। पर उसको एक जगह बिठाकर उससे काम लेना, उसके बस में न था। पिता ज़रा आँख मूँदता तो वह बाहर खिसक जाता और शाम तक वापिस आने का नाम न लेता। मुस्तफ़ा ने उसे पीट कर देखा, पर अलादीन तो चिकना घड़ा था। आख़िर वह करता तो क्या करता? उसने अपने लड़के के बारे में, उम्मीद ही छोड़ दी। लड़के की फ़िक्र में ही मुस्तफ़ा ने चारपाई पकड़ी और कुछ महीनों बाद वह गुज़र गया।

पिता के मर जाने के बाद, अलादीन पर रहा सहा नियन्त्रण भी जाता रहा।

कुछ काम-धाम न करता। वह पन्द्रह वर्ष तक आवारागर्दी करता रहा।

उसकी माँ जानती थी कि वह दुकान पर काम न करेगा। इसलिए उसने दुकान बेच दी। सूत कात कर दो-चार पैसे कमाती, उसी से घर-बार चलाती। अलादीन की देख-भाल करती। अलादीन को इसकी भी परवाह न थी कि उसकी माँ उसके लिए खून-पसीना एक कर रही थी।

अलादीन गली में साथियों के साथ खेल रहा था कि उस रास्ते से जाते जाते एक व्यक्ति ने उसे ध्यान से देखा।

वह व्यक्ति अफ्रीका के मोरोको देश से आया था। वह मूर था। वह बड़ा जादूगर भी था। उसने अलादीन को देखकर सोचा कि वह उसके काम आ सकेगा। जादूगर ने उसके दोस्तों से उसका नाम आदि भी जान लिया।

फिर उसने अलादीन के पास जाकर पूछा—"तुम मुस्तफ़ा दर्ज़ी के लड़के हो न?"

"जी हाँ, उनके गुज़रे हुए बहुत दिन हो गये हैं!" अलादीन ने कहा।

यह सुनते ही जादूगर ने अलादीन को गले लगा लिया। उसके गाल चूमकर, वह ज़ोर ज़ोर से रोता आँसू बहाने लगा।

"क्यों रो रहे हैं आप? क्या आप मेरे पिताजी को जानते हैं?" अलादीन ने जादूगर से पूछा।

"अरे भाई, क्या पूछते हो! जब मैं यह जानूँ कि मेरा सगा भाई मर गया है, तो क्या मैं नहीं रोऊँगा? देश-परदेश घूम-घाम कर जब मैं घर पहुँचा तो तुम कहते हो कि वह गुज़र गया है! पर तुम्हें देखते ही मैं जान गया कि तुम मेरे भाई के लड़के हो। तुम्हारे पिता की शादी से

पहिले, यानि चालीस साल पहिले ही, मैं देश छोड़कर चला गया था। पर तुझे देखते ही मुझे ऐसा लगा, जैसे मैं अपने भाई को देख रहा हूँ। तेरे सिवाय अब इस संसार में और कोई नहीं है। तुझे देखकर मैं यही सोचकर सन्तोष कर लूँगा कि मैंने भाई को देख लिया है।" कहकर जादूगर ने दस मुहरें अलादीन के हाथ में रखते हुए कहा—"ये अपनी माँ को देना। उनसे कहना कि मैं वापिस आ गया हूँ और मैंने उनका हालचाल पूछा है। कहोगे न? कल मैं उनसे बातचीत करूँगा। मैं अपने भाई का घर देखकर खुश होऊँगा।"

जादूगर की दी हुई मुहरों को देखकर अलादीन को बड़ी खुशी हुई। वह प्रायः भोजन के समय पर भी घर न पहुँचता था, पर उस दिन पहिले ही माँ के पास जाकर उसने कहा—"माँ, परदेश से चाचा वापिस आये हैं। कल तुम्हें देखने आयेंगे।"

"क्यों बेटा, क्या तुम्हारी अक्ल मारी गयी है? तेरे चाचा कहाँ हैं? तुम्हारे पिताजी के कोई भाई न था!" उसकी माँ ने कहा।

"माँ, तुम भी क्या कहती हो? वे मेरे चाचा ही हैं। उन्होंने मुझे पास बुलाकर दुलारा-पुचकारा भी था। जब मैंने बताया कि पिताजी मर गये थे, तो वे रोये भी थे। उन्होंने यह भी तुमसे कहने के लिए कहा था कि वे वापिस आ गये हैं।" अलादीन ने कहा।

अगले दिन सवेरे जादूगर, अलादीन को खोजता खोजता, गलियों में फिरने लगा। इधर उधर कुछ देर तक फिरने के बाद, एक जगह उसको अलादीन और उसके साथी दिखाई दिये। जादूगर ने

अलादीन को फिर पास बुलाकर, उसका चुम्बन कर, उसके हाथ में दो मुहरें रखकर उसने कहा—"इन्हें ले जाकर अपनी माँ को दो। ज़रूरी चीज़ों को खरीद कर, भोजन तैयार करने के लिए कहो। कहना कि मैं शाम को खाने के लिए आऊँगा। घर का रास्ता तो दिखाओ।"

अलादीन ने उसको अपने घर का रास्ता दिखाया। उसने माता के पास जाकर कहा—"माँ, शाम को हमारे घर वे भोजन करने आ रहे हैं।" माँ, तुरत बाज़ार खाने पीने की चीज़ें खरीदने गयी। उस गरीब के घर बर्तनों की भी कमी थी। उसने पड़ोस के घरों से बर्तन उधार लेकर, रसोई करनी शुरू की।

अन्धेरा हो गया। अलादीन की माँ ने उससे कहा—"बेटा! खाना तो बना दिया है। मालूम नहीं कि वे हमारे घर का रास्ता जानते हैं कि नहीं! क्या तुम जाकर उन्हें लिवा लाओगे!"

अलादीन बाहर जाने को था कि किसी ने घर का किवाड़ खटखटाया। जादूगर बहुत सारे फल, पेय आदि, कुली पर लाद कर लाया था।

जादूगर ने कुली को पैसे देकर भेज दिया और उसने अलादीन की माँ से बातचीत शुरू की—"क्या, भाभी जी! आप बता सकेंगी कि हमारे भाई साहब कहाँ बैठा करते थे?"

अलादीन की माँ ने वह जगह दिखाई, जहाँ मुस्तफ़ा बैठा करता था। तुरत जादूगर उस जगह घुटने टेक कर बैठ गया। भूमि को नमस्कार कर, आँसू बहाता कहने लगा—"अरे भाई, अफ़सोस कि तुम्हारे जीवित रहते मैं वापिस न आ सका। कितना अभागा हूँ!" वह रोने धोने लगा।

"तुम वहीं बैठो!" अलादीन की माँ ने कहा।

"नहीं, मैं यहाँ नहीं बैठूँगा। अगर आप बुरा न मानें तो सामने बैठूँगा। अगर इनके सामने बैठने की किस्मत न थी, तो कम से कम उनके बैठने की जगह के सामने बैठने की तो किस्मत है।" जादूगर ने कहा।

उसका रोना-चिल्लाना, व्यवहार आदि देखकर, अलादीन की माँ सचमुच यकीन करने लगी कि वह उसके पति का छोटा भाई ही था। आखिर उसने पूछा—

"क्यों रो रहे हो भाई! रोओ मत। मरनेवालों के साथ मर तो सकते नहीं।" कहकर उसने जादूगर को ढाढ़स बँधाया।
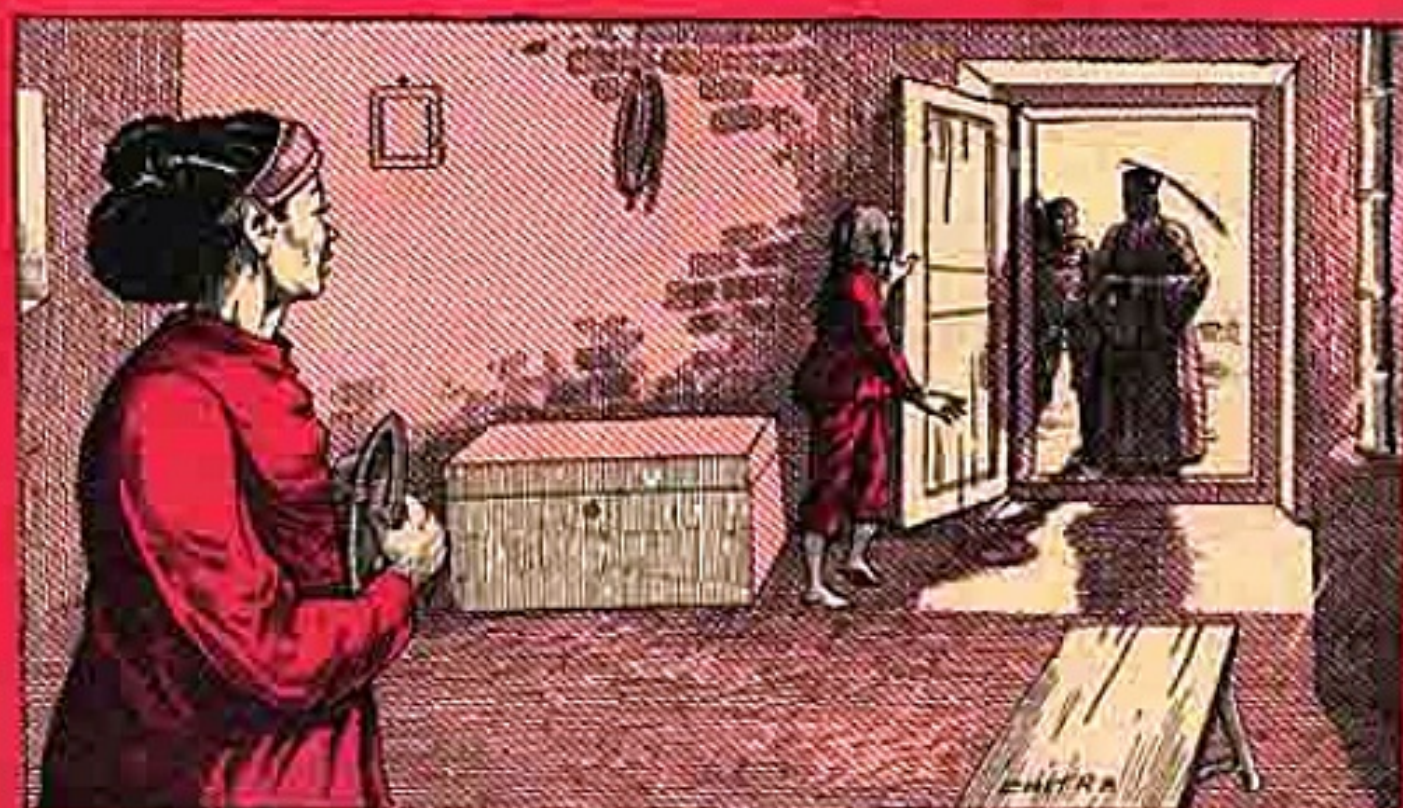
जादूगर ने उससे कहा—"देखिये, भाभी! आप इस पर आश्चर्य न करें कि आपने भाई से शादी की, और उनके साथ इतने साल रहे, और मैं देखने भी न आया। इसका कारण यह था कि मुझे देश छोड़कर गये चालीस साल हो गये हैं। मैं मिश्र, भारत, अरेबिया, सीरिया आदि, देशों में घूमा हूँ। कैरो नगर में बहुत दिन रहा हूँ। कैरो नगर जैसा शहर संसार में दूसरा और कोई नहीं है। आख़िर मैं मोरोको देश पहुँचा और वहीं तीस वर्ष से रह रहा हूँ। एक दिन अकेला बैठा कुछ सोच रहा था कि मुझे घर की, भाई की याद सताने लगी। मैंने उनको देखना चाहा। जाने क्या क्या ख्याल आने लगे। मुझे डर लगने लगा कि कहीं उन्हें देखे बिना ही न गुज़र जाऊँ। मैंने तो काफ़ी रुपया कमा लिया था। पर मैं घबराने लगा कि कहीं ऐसा न हो कि भाई गरीबी की मुसीबतें ही झेल रहे हों। फिर क्या था! घर छोड़कर चला आया। रास्ते में मुझे क्या क्या मुसीबतें झेलनी पड़ीं, इसके बारे में अब क्या कहना! जैसे तैसे मैं इस शहर में पहुँच गया। गली में जाते जाते, अलादीन मुझे अपने साथियों के साथ खेलता दिखाई दिया। आप यकीन कीजिये या न कीजिये, उसे देखते ही मैंने पहिचान लिया। मेरा हृदय खुशी के कारण उछलने लगा। परन्तु उसके यह कहने पर कि भाई मर गये थे, मुझे इतना दुःख हुआ कि कुछ पूछो नहीं। मैं अपने को काबू में न रख सका। शायद अलादीन ने आपको

बताया ही होगा। मैंने यह सोचकर तसल्ली कर ली कि भाई गये तो गये कम से भाई की शक्लवाला अलादीन तो है। उनकी शक्ल हूबहू भाई की शक्ल है।"

यह सब सुनते सुनते अलादीन की माँ की आँखें भी भर आईं। यह देख, बातों का रुख बदलते हुये, जादूगर ने अलादीन से पूछा—"बेटा, अलादीन! तुमने क्या पेशा सीखा है? अपना और माँ का पालन-पोषण करने के लिए क्या करोगे?"

ये प्रश्न सुनते ही अलादीन ने अपना सिर झुका लिया। माँ की बात सुनकर तो वह और भी शर्मिन्दा हुआ।

"पूछी तो अलादीन की ही बात पूछी, क्यों भाई! उसे कुछ नहीं आता। इतना निकम्मा आदमी मैंने कहीं नहीं देखा है। आवारागर्दों के साथ दिन-रात खेलता रहता है। उसके पिता ने, उसे सीना-पिरोना सिखाने की बहुत कोशिश की पर क्या फ़ायदा! इसी की वजह से वे बीमार भी हो गये। क्या बताऊँ? आठों पहर सूत कातती हूँ, पर दो टिकड़ भी नसीब नहीं और यह खाने के सिवाय घर आने का नाम नहीं लेता। घर इसे

शायद काटता-सा है। मैं भी देखती देखती हार गई हूँ। मैं उसकी परवरिश नहीं कर सकती। वह खुद ही अपना पेट भरे। मेरी भी उम्र हो गई है।" अलादीन की माँ ने कहा।

जादूगर ने अलादीन की ओर मुड़कर कहा—"बेटा! यह तो अच्छी बात नहीं है! तुम तो अपने बाप की तरह अच्छे अक़्लमन्द हो, क्या तुम्हारे लिए ऐसा करना अच्छा है? कामकाजी होकर, तुझे माँ की देखभाल करनी चाहिये, न कि वह तेरी! काम करना चाहो तो कितने ही

तरह के काम हैं। तू बता, तुझे क्या सीखने की मर्ज़ी है, उसे सिखाना मेरे जिम्मे रहा। अगर तुम अपने पिता का दर्ज़ी का पेशा नहीं करना चाहते हो तो कुछ और करो। मैं तुम्हारी हर तरह से मदद करने के लिए तैयार हूँ।"

इसका अलादीन ने कोई जवाब न दिया। जादूगर ने यह अन्दाज़ करके कि वह मेहनत नहीं करना चाहता है, कहा— "अगर तुम हाथ का हुनर वग़ैरह नहीं सीखना चाहते हो तो जाने दो। इसमें क्या बात है! तेरे लिए एक कपड़े की दुकान खोलूँगा। उसे रेशमी कपड़ों से भर दूँगा। मज़े में व्यापार करना।"

यह सुन अलादीन का मुँह खिल-सा गया। अच्छी पोशाक पहिन कर, तिजोरी के पास बैठकर, वह अपने को व्यापारी कहलाना चाहता था। वह जादूगर को देखकर मुस्कराया और स्वीकृति सूचित करते उसने सिर हिलाया।

"तब क्या है! मैं तुझे कल बाज़ार ले जाऊँगा। बड़े बड़े व्यापारियों की-सी पोशाकें खरीद दूँगा। फिर एक बढ़िया दुकान खुलवा दूँगा।" जादूगर ने कहा।

इस नये रिश्तेदार को खुदा की तरह आया देखकर अलादीन की माँ फूली न समाई। उसने अलादीन से कहा—"देख, तुम्हारे चाचा तुम्हारे लिए क्या क्या कर कर रहे हैं। उनका नाम रखना। कम से कम, अब से अक़्लमन्दी से रहना, उनका कहा सुनना।"

उसने फिर भोजन परोसा। तीनों ने सन्तोष से भोजन किया। इधर उधर की बातें चलती रहीं। जादूगर यह कह चला गया कि वह फिर वापिस आयेगा।

(अभी और है)

!!
A. Satyam.
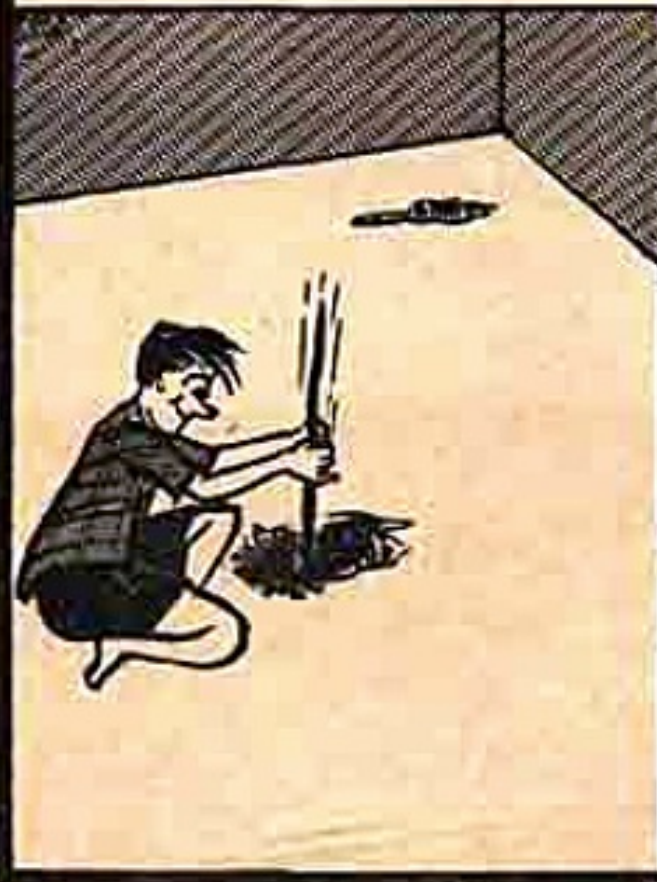
विचित्र शक्तियाँ

विक्रमार्क तो हार मानना जानता न था। शव को उतारकर, कन्धे पर डाल, वह फिर श्मशान की ओर चल पड़ा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा—"राजा, अद्भुत शक्तियों को पाने के लिए कुछ आदमी, दुनियाँ भरके उल्टे-सीधे काम करते हैं, पर उनके कारण सुख तो मिलता ही नहीं है, जिसकी उम्मीद होती है, बल्कि अपकार भी होता है। गुणनिधि इसका अच्छा दृष्टान्त है। उसकी कहानी सुनाता हूँ। सुनो।" उसने कहानी सुनानी शुरू की :

यमुना नदी के किनारे, एक गाँव में गुणनिधि नाम का नौजवान रहा करता था। छुटपन से ही तत्वज्ञान पर उसका विशेप प्रेम था। इसलिए काशी में शिक्षा पूरी करके, वह घर वापिस न गया, परन्तु

बेताल कथाएँ

बड़े बड़े तत्वज्ञानियों के पास सांख्य दर्शन आदि पढ़ने लगा।

काशी में गुणनिधि का एक मित्र था। उसका नाम था जयवर्मा। जयवर्मा काशी का न था। वह किसी और जगह से आकर वहाँ रह रहा था। वह दिन भर इधर-उधर का व्यापार करके कुछ कमाता और जो कुछ कमाता, उसे जुए में उड़ा देता और रात को खाली हाथ घर पहुँचता। यह उसकी दिनचर्या थी।

यद्यपि दोनों में कोई समानता न थी, पर गुणनिधि और जयवर्मा अच्छे मित्र बन गये। वे दोनों एक ही घर में रहा करते थे। जयवर्मा ने कई बार अपने साथी को भी जुआ खेलने ले जाना चाहा। पर गुणनिधि को जुआ कतई पसन्द न था। और तो और उसने जयवर्मा से भी कहा— "तेरी यह बुरी आदत कैसे हो गई है! जो कुछ कमाता है, इस पर फूँक देता है। क्या फ़ायदा?"

"क्या धन शाश्वत है! आता है; जाता है! भाग्य को साथ करने में कितना आनन्द है। यह तू अनुभव से ही जान सकता है।" जयवर्मा कहा करता।

परन्तु वह भाग्य हमेशा उसके प्रतिकूल ही रहता। वह एक दिन भी जुए में जीत कर घर न लौटा। जैसे जैसे धन खोता जाता, वैसे वैसे जयवर्मा का यह व्यसन बढ़ता जाता।

आख़िर उसने एक दिन गुणनिधि से कहा—"अगर तू भी एक बार मेरे साथ आया, तो हो सकता है कि मेरा भाग्य बदल जाए। क्योंकि तू मेरा हितैषी है। तुम जुआ न खेलना, मेरे साथ रहना। बस!" गुणनिधि न न कर सका। वह उसके साथ जुआ खेलने की जगह गया।

जयवर्मा ने हाथ में कुछ पैसा लेकर गुणनिधि से पूछा—"हमको किस पर बाज़ी लगाने के लिए कहते हो? जिसे तुम चाहो उसे बताओ।" गुणनिधि ने जो मन में वह कह दिया। जयवर्मा ने उसी पर बाज़ी लगायी। जब पासा डाला गया तो गुणनिधि ने जो कुछ कहा था, वह ठीक निकला। जयवर्मा जीत गया।

"अब एक और बताओ।" उसने कहा। अनायास गुणनिधि के मुख से एक संख्या निकल पड़ी। इस बार भी जयवर्मा जीता। वह आधी रात तक जुआ खेलता रहा। हर बार गुणनिधि बताता और जयवर्मा बाज़ी लगाता। जाने इसमें भी क्या खूबी थी! जो कुछ गुणनिधि कहता पासा भी वही बताता। जयवर्मा ने हज़ार मुहरों से अधिक जीतीं। वह खुशी खुशी घर गया। उसने गुणनिधि को गले लगा कर कहा—"भाई! तुम मेरे भाग्य हो, अगर हम दोनों साझा कर लें तो सारी की सारी काशी जीत सकते हैं।"

यद्यपि गुणनिधि को जुआ बिल्कुल पसन्द न था; परन्तु अपने साथी की खुशी देखकर वह भी खुश होने लगा।

तब से रोज़ जयवर्मा अपने साथ जुए के लिए गुणनिधि को आने के लिए सताने लगा। पहिले कुछ दिन तो वह उसकी बात को न टुकरा सका। इसलिए जयवर्मा भी जीतता रहा। यह साफ़ था कि गुणनिधि में कोई अज़ीब शक्ति थी, क्योंकि जो कुछ वह कहता वह ठीक निकलता। गुणनिधि स्वयं यह न जानता था कि उसमें यह शक्ति कब से आ गयी थी। जब जयवर्मा यह कहता—"किस पर बाज़ी लगाने के लिए कहते हो?" तुरत उसे ऐसा लगता, जैसे कान में कोई कुछ कह रहा हो, वह ही वह बता देता और वही निकलता भी।

हर रोज़ जयवर्मा हज़ारों मुहरें जीतने लगा। उसमें से आधा वह गुणनिधि को दे देता। जुए की आदत होनी ही नहीं चाहिये, अगर हो गई, तो कोई चाहे जीते या हारे, आदत और बिगड़ती जाती है। जयवर्मा पर इस व्यसन की सनक सवार थी। वह व्यापार छोड़कर, दिन रात जुआ खेलता। साथ वह गुणनिधि को भी ज़रूर ले जाता।

गुणनिधि के अध्ययन में विघ्न होने लगा। समय को व्यर्थ जाता देख, वह

दुखी होने लगा। उसने जयवर्मा से एक दिन कहा—"तुमने जुए में अब काफ़ी जीत ही लिया है। अब क्यों नहीं इसे छोड़ देते हो? चाहते हो तो मेरे हिस्सा का भी पैसा ले लो। मुझे पैसा नहीं चाहिए। तुम किसी कारोबार में अपनी ज़िन्दगी बसर करो। कब तक यों समय व्यर्थ करते रहोगे?"

"अरे! मुश्किल से एक मौका मिला है, और तुम उसे ही खोने के लिए कहते हो? हो सकता है कि जो अजीब शक्ति तुम में है, वह कल तुम में न रहे। तेरे लिए भी इस शक्ति को व्यर्थ जाने देना अच्छा नहीं है।" जयवर्मा ने कहा।

गुणनिधि को यह जानते देर न लगी कि उसका मित्र उसे आसानी से नहीं छोड़ेगा। उसने जयवर्मा की आदत छुड़ाने के लिए बहुत-से उपाय सोचे। जब जयवर्मा यह पूछता—"किस पर लगाऊँ?" तो वह कहा करता "मुझे कुछ सूझ नहीं रहा है।" तुरत जयवर्मा रुक जाता, और जब तक वह न बताता, वह न खेलता। गुणनिधि ने सोचा कि यदि जयवर्मा दो-चार बार हार गया तो उसका

मेरी शक्ति पर विश्वास जाता रहेगा। इसलिए अगर वह एक बात सोचता, तो अपने दोस्त से दूसरी कहता। जयवर्मा भी वही करता। पर गुणनिधि के मुख से जो बात निकलती, वही ठीक होती और जयवर्मा जीता करता।

जैसे जैसे, जयवर्मा का जुए में जीतने के कारण उत्साह बढ़ता जाता था, तैसे तैसे, पढ़ाई ख़राब होने के कारण गुणनिधि का उत्साह घटता जाता था। शीघ्र ही उसे, पढ़ाई से, काशी नगर से, अपने मित्र जयवर्मा से, जुए से, बड़ी जबर्दस्त घृणा होने लगी। वह घर और आत्मीयों के सपने देखने लगा।

वह अगर जाने के लिए कहता तो जयवर्मा उसे जाने न देता, और जब वह उसे जुआ छोड़ने के लिए कहता तो वह अनसुनी कर देता। एक दिन सवेरे सवेरे वह गंगा नदी के किनारे गया। वहाँ उसने एक माँझी से पूछा—"मुझे परले पार ले जाओ। तुम जितना माँगोगे, उतना दूँगा।"

गंगा में बाढ़ थी, तो भी माँझी ने धन के लालच में उसे नाव पर चढ़ा लिया। नाव परले पार की ओर चली।

गुणनिधि के उठने के कुछ देर बाद, जयवर्मा भी उठा। उसे सन्देह हुआ कि उसका साथी, बिना उसको बताये चला गया था। वह भी गंगा की ओर भागा। नदी की मंझधार में, नाव में गुणनिधि को देखकर, वह उसे ज़ोर ज़ोर से पुकारने लगा। चिल्लाता गया।

"मैं अपने देश जा रहा हूँ। वापिस नहीं आऊँगा।" गुणनिधि ने कहा।

जयवर्मा ने इधर-उधर देखा। आस-पास कोई नाव न थी। उसे तैरना आता था। वह हिम्मत करके गंगा में कूद पड़ा और गुणनिधि की ओर तैरने लगा। वह गंगा के बीच में पहुँचा था कि एक मगर उसको नीचे खींच ले गया।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर पूछा—"राजा! जयवर्मा की मृत्यु का क्या कारण है? उसका व्यसन? या उसका रुपये-पैसे का लालच? या गुणनिधि की विचित्र शक्ति? या गुणनिधि का मित्र के प्रति विश्वासघात? अगर जान-बूझकर जवाब न दिया तो तेरा सिर फूट जायेगा।"

"जयवर्मा की मृत्यु के कारण ये न थे। जुआखोर, लालची लोग इस दुनिया में बहुत हैं। गुणनिधि की अद्भुत शक्तियों ने जयवर्मा का भला ही किया था, बुरा नहीं। सच कहा जाय तो ग़ल्ती जयवर्मा की ही है। ग़ल्ती यह थी कि उसने गुणनिधि की स्वतन्त्रता पर प्रतिबन्ध लगा दिये थे। जो दूसरों की स्वतन्त्रता में दखल देते हैं, उनका बुरा ही होता है। जयवर्मा का हाल भी यही हुआ।" विक्रमार्क ने कहा।

राजा का मौन भंग होते ही बेताल, शव के साथ अदृश्य हो गया। (कल्पित)

[२]

[रूपधर ट्रोय नगर से घर के लिए निकला था पर वह पहुँचा ऐसे द्वीप में जहाँ भाल लोचन राक्षस रहा करते थे। वह बारह सैनिकों के साथ एक भाल लोचन की गुफ़ा में फँस गया। उस राक्षस ने उसके कई सैनिकों को हजम कर लिया। आखिर, रूपधर, उस राक्षस की आँख फोड़कर, बाळाको के साथ, अपने बचे हुये सैनिकों को लेकर बाहर निकल गया। फिर वे उस द्वीप को छोड़कर चल पड़े।]

रूपधर के जहाज शीघ्र ही नौका द्वीप पहुँच गये। इस द्वीप के बारे में यह मशहूर था कि वह तैरा करता था। द्वीप में एक दुर्भेद्य काँसे का किला था। इस दुर्ग के राजा का नाम चित्राश्व था। दिग्पालक इनके मित्र समझे जाते थे। इनके छे लड़के और छे लड़कियाँ थीं।

चित्राश्व ने रूपधर और उसके सैनिकों का स्वागत किया। उनको एक महीने तक अपना मेहमान बनाया। उन्होंने रूपधर से, ट्रोय नगर के युद्ध के बारे में, और विजयी ग्रीक योद्धाओं के बारे में सब कुछ जान लिया। गपशप में आराम से महीना गुजर गया।

आखिर एक दिन रूपधर ने चित्राश्व से कहा—"हम कब तक आप के अतिथि बनकर रहेंगे? हमें जाने की आज्ञा

दीजिये। यही नहीं, आपको हमारी यात्रा की सफलता के लिए हर तरह की मदद भी करनी चाहिए। हमने पहिले ही समुद्र में बहुत से कष्ट भुगते हैं। हम भटके हैं।"

चित्राश्व सहायता करने के लिए मान गये। वायु देवता के वर से, हर प्रकार की वायु उनकी आज्ञा मानती थी। उन्होंने सिवाय एक वायु के, बाकी छे वायुओं को एक चमड़े के थैले में बाँधकर रूपधर को देते हुये कहा—"बेटा, एक वायु को, जो तुम्हारे जहाजों को स्वदेश सुरक्षित पहुँचाने में साधन होगी, छोड़कर, मैंने छः वायुओं को इस चमड़े की थैली में रखा है। इसलिए तेरी यात्रा निर्विघ्न होगी। घर तक पहुँचने तक इन वायुओं को बाहर न निकलने देना, सम्भलकर रहना, तुमपर कोई आपत्ति न आयेगी।"

रूपधर ने अपनी कृतज्ञता प्रकट की। वायुओं की थैली उसने स्वयं ले ली। अपने सैनिकों को लेकर वह यात्रा पर निकल पड़ा। जो चित्राश्व ने कहा था, वह ठीक निकला।

नौ दिन और नौ रात, निरन्तर यात्रा चलती रही। दसवें दिन, समुद्र में ईषिका का किनारा दिखाई दिया। रूपधर ने किनारे पर वह आग भी देखी, जो लोग हाथ सेंकने के लिए अक्सर जलाया करते थे।

स्वदेश को देखते ही रूपधर और उसके सैनिकों की खुशी का ठिकाना न रहा। थोड़ी देर में जहाज किनारे पर पहुँच जायेंगे, फिर हर कोई अपने अपने घर पहुँचेगा। वे तरह तरह के ख्वाब देखने लगे।

जब से रूपधर ने नौका द्वीप छोड़ा था उसने आँखें न मूँदी थीं। वायुओं की थैली को अपने हाथ में रखकर ही, उसने नौ दिन सुरक्षित रखा। जब उसने जाना कि अब घर पहुँच ही जायेंगे, तो जाने उसको कहाँ से दुनियाँ भर की नींद आ गई। जहाजों के किनारे पर पहुँचने से पहिले, रूपधर ने कुछ देर तक सोना चाहा।

उसने आँखें मींची ही थी; कि उसके सैनिकों में कानाफूसी होने लगी।

"उस थैली में क्या है!" एक ने पूछा।

"और क्या होगा? सोना, और इधर उधर के इनाम।" दूसरे ने निस्संकोच कहा।

"इस रूपधर का हर कोई मित्र है। हर कोई इसे इनाम देता है। हमें कोई नहीं पूछता।" तीसरे सैनिक ने कन्धा हिलाते हुए कहा।

"यह नहीं, इसके साथ दस वर्ष घरबार छोड़कर, बाल-बच्चों से दूर, हम भी युद्ध करते रहे, पर देख यह कितना लूटकर साथ ला रहा है। हम खाली हाथ पहुँच रहे हैं। लूट तो खैर लूटी ही! रास्ते भर भी इसने इनाम पाये।" चौथे सैनिक ने कहा।
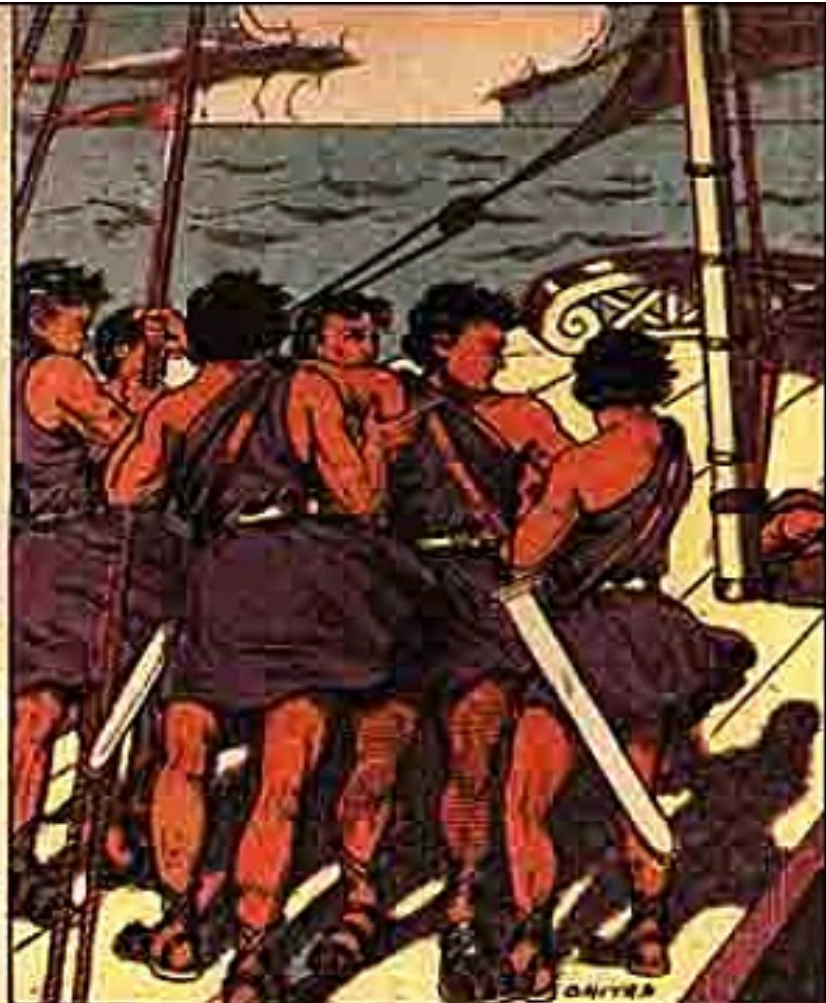
"आखिर देखें तो इस थैली में है क्या!" पाँचवे सैनिक ने कहा।

यह बात सब मान गये। थैली का मुँह चान्दी के तागे से बँधा हुआ था। रूपधर के सैनिकों ने, बड़ी मेहनत करके, उसको खोला।

इतने में उस थैले में से भयंकर वेग और ध्वनि के साथ, वे वायुयें बाहर निकलीं। उन वायुओं के कारण, जहाज़ डांवाडोल हो गये। जहाज़ों में लोग औंधे

मुँह गिरे, जैसे कोई सूखे पेड़ हो। उन्होंने अपने मुँह हाथों से ढक लिया। भयंकर तूफ़ान-सा आ गया।

इस प्रलयंकर आवाज़ को सुनकर रूपधर जागा। पर वह आँखें न खोल सका। न वह ही देख सका कि वहाँ क्या हो रहा था। जब उस झंझा का प्रकोप कम हुआ तो जहाज़ फिर नौका द्वीप पहुँच रहे थे। रूपधर के सैनिक, पास आये स्वदेश से दूर होता देखकर, बहुत रोये धोये। रूपधर इतना निरुत्साहित हुआ कि कुछ नहीं कहा जा सकता। उसकी निराशा की हद न थी।

रोने से क्या फ़ायदा! जो होना था सो हो गया था। रूपधर और उसके सैनिकों ने, पीने का पानी इकट्ठा कर भोजन बनाकर खाया। फिर रूपधर, अपने साथ दो सैनिकों को लेकर चित्राक्ष के पास गया।

उन्होंने आश्चर्य से पूछा—"मैंने तुम्हारे घर पहुँच ने के लिए आवश्यक मदद दी थी, अब फिर तुम यहाँ कहाँ से आये? बताओ।"

"महाराज! क्या बताऊँ? मैंने गल्ती से दो क्षण आँखें मूँदी। तुरत मेरे मूर्ख

सैनिकों ने थैली खोल दी, और वायुओं को छोड़ दीं। आप शक्तिवान हैं! आप फिर हमारी मदद कृपया कीजिये। नहीं तो हमें और कष्ट झेलने पड़ेंगे।" रूपधर ने कहा।

"छी, पापी, मेरा द्वीप छोड़कर तुरत तुम चले जाओ। देवता तुम से नाखुश हैं। मैं ऐसे व्यक्ति की कदापि सहायता न करूँगा।" चित्राश्व ने रूपधर को दुत्कार दिया। वह बहुत कुपित हुआ। रूपधर ने बहुत मनाया पर चित्राश्व ने उसकी एक न सुनी।

जहाजों ने फिर वापसी यात्रा शुरू की। पर किसी में कोई जोश न था। हवा बिल्कुल अनुकूल न थी, इसलिये चप्पू चलाते चलाते सैनिकों के हाथ में छाले पड़ गये।

छः दिन लगातार समुद्र में यात्रा करके, रूपधर की टोली, आखिर एक द्वीप में पहुँची। यह उत्तरी ध्रुव का एक प्रान्त था। यहाँ अनेक मासों का दिन होता है। सूर्य छुपते ही फिर उदय होता है। कहाँ छुपता है, और कहाँ उगता है, यह अपरिचित लोगों के लिए जानना कठिन है।

रूपधर के जहाज जहाँ लगे थे, वहाँ समीप ही, दो पहाड़ों की चोटियाँ थीं। नउके बीच में से एक जहाज के जाने का ही रास्ता था। उसके बाद विशाल समुद्र झील के रूप में था। वहाँ जहाजों के लिए अच्छा बन्दरगाह भी था। बाकी जहाजों को उसने बन्दरगाह में जाने दिया। परन्तु उसने अपना जहाज, बाहर, पहाड़ों के चट्टानों से बंधवा दिया।

उसके बाद, वह पासवाली चोटी पर चढ़ गया। उसने चारों तरफ़ देखा। दूर तक न कोई पेड़ था, न किसी प्रकार की हरियाली ही। परन्तु बहुत दूरी पर, उसे आकाश में धुँआ उड़ता दिखाई दिया। इसलिये यह बात साफ़ थी कि उस ईलाके में मनुष्य रहते थे। उसने तीन सैनिकों को बुलाकर कहा—"तुम जहाँ धुँआ निकल रहा है, वहाँ जाओ, और मालूम करो कि वहाँ किस प्रकार के लोग रहते हैं।" सभ्य या असभ्य!"

कुछ दूर जाने पर, उनको एक कच्चा रास्ता दिखाई दिया। उस रास्ते पर जाते जाते थोड़ी दूर बाद कुछ मकान आये। उन मकानों के पास, एक नाले से, एक लड़की पानी ले जाती दिखायी दी। दृश्य सुन्दर था।

"इस ग्राम का राजा कौन है? उनका घर कहाँ है? हम उन्हें देखना चाहते हैं।" सैनिकों ने उस लड़की से पूछा। उसने उनके प्रश्नों के उत्तर में एक ऊँचे घर की छत दिखायी। शायद वह उनकी भाषा न समझती थी।

उनके उस घर में घुसते ही, उन्हें एक राक्षसी-सी कोई स्त्री दिखाई दी। उसे देखते ही उन्हें घृणा हुई। वह बहुत ही बदसूरत थी।
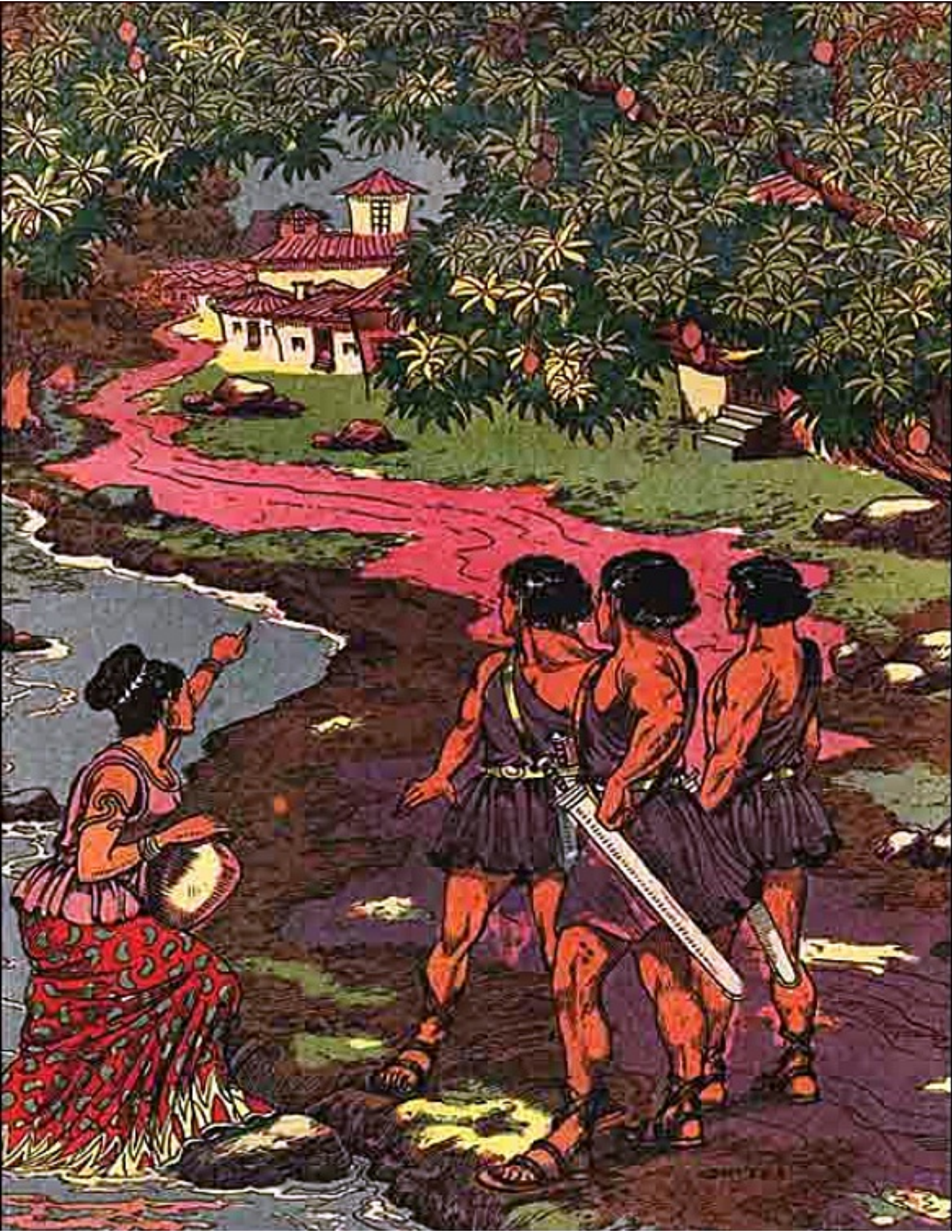
उस स्त्री ने, तुरत किसी को भिजवाकर अपने पति को बुलवाया। उसने आते ही रूपधर के सैनिकों में से एक को पकड़ा, उसे फ़र्श पर पीटकर, मारकर, वह अपने रसोई घर में ले गया और शायद उसको पकाकर खा गया। यह देख दोनों, प्राण बचाकर, अपने जहाज़ों के पास भागे।

परन्तु इस बीच, राक्षस ने गली में आकर ज़ोर से आवाज़ की। यह सुनते ही वहाँ हज़ारों राक्षस जमा हो गये। जो जहाँ था, वहाँ से भागा। वे बन्दरगाह के चारों ओरवाले पहाड़ों पर चढ़ गये। और जहाज़ों पर दनादन पत्थर फेंकने लगे। पत्थर इतने बड़े थे कि मनुष्य मुश्किल से उठा सकता था। पर उनके हाथ में वे कंकड़-से लगते थे।

बन्दरगाह में जितने जहाज़ थे, सब तोड़ दिये गये : रूपधर के सैनिक पत्थरों द्वारा कुचल दिये गये। राक्षस, उनको अपने घर उठा ले गये।

बन्दरगाह में यह हत्याकाण्ड देखकर, रूपधर ने सोचा कि वहाँ रहना खतरे से खाली न था। उसने जहाज़ की रस्सियाँ तोड़ दीं। और उसने अपने बचेखुचे आदमियों से कहा—"चप्पू चलाओ, जल्दी चलाओ। नहीं तो जान नहीं बचेगी।"

उन्होंने भी जी जान से चप्पू चलाये, और जहाज़ को समुद्र में ले गये। सिवाय उस जहाज़ के रूपधर के अन्य जहाज़ नष्ट हो गये थे और उनमें जितने ग्रीक थे, उनकी बुरी तरह मौत हुई।

(अभी और है)

मित्र-भेद

एक दूसरी कथा सुनो फिर
था इक राजा का बंदर से मेल,
जहाँ जहाँ राजा जाता था
बंदर भी करता था खेल ।

एक दिन राजा सोच में था
बंदर पंखा झलता पास,
इतने में आ बैठी मक्खी
राजा की गर्दन के पास ।

उड़ी हवा से नहीं शीघ्र जब
तब आया बंदर को रोष,
स्वामिभक्ति का दिखलाया झट
उस मूरख ने भारी जोश ।

पड़ी वहाँ तलवार एक थी
किया उसी का पूरा वार,
मक्खी भागी, पर राजा भी
स्वर्ग-लोक को गये सिधार!

इसीलिये मैं कहता दमनक,
भला न होता मूरख मित्र ;

और एक हूँ कथा सुनाता
नहीं लगेगी तुम्हें विचित्र ।

ब्राह्मण पंडित एक गाँव में
रहता था, पर था वह चोर,
एक दिवस कुछ व्यापारीगण
आ निकले सहसा उस ओर ।

उनके पास बहुत ज़ेवर थे,
औ' मणि-मुक्ताओं की माल,
लोभी ब्राह्मण ने उनका वह
धन हथियाने की सोची चाल ।

मीठी मीठी बातें कहकर
किया प्राप्त उनका विश्वास,
और साथ हो लिया उन्हीं के
चलते जैसे अनुचर दास ।

चलते चलते बीच राह में
पड़ा एक जंगल अति घोर,
जहाँ जंगली डाकू उनपर
पड़े टूट करते अति शोर ।

श्री 'भारतीभक्त'

कहा, डाकुओं ने उनसे यह—
'करो न अब बचने का यत्न,
लाओ जल्दी, छिपा चर्म के
अन्दर जो रख छोड़े रत्न।'

चोर ब्राह्मण ने यह सोचा
इनसे पाना ही है त्राण,
मणियाँ भी ये ले न सकें औ'
बचे रहें हम सबके प्राण!

यही सोचता बोला निर्भय—
'देखो मेरे तन को चीर,
अगर मिले कुछ भी इसमें तो
ले लो सबका चीर शरीर!'

जगह जगह पर चीर देह को
देखा डाकू ने तत्क्षण,
नहीं मिला पर उन्हें एक भी
छिपा जवाहर या कि रतन।

धनवाले ये नहीं बटोही
व्यर्थ इन्हें रोकें क्योंकर,
यही उन्होंने सोच-समझकर
छोड़ दिया सबको सत्वर।

इसी लिए मैं कहता भाई
मूरख को मिलता अपमान,
नहीं अहित होता है कुछ भी
शत्रु अगर हो विचारवान।"

इधर यहाँ दमनक-करटक में
छिड़ा हुआ था वाद-विवाद,
उधर बैल और सिंह भिड़े थे
करते वन में भैरवनाद।

बहुत देर तक रहा ज़ोर पर
उन दोनों का यह संग्राम,
किया सिंह ने ही आखिर में
महावृषभ का काम तमाम।

नशा युद्ध का उतरा जब तो
बढ़ा शेर का मन परिताप,
मार मित्र को, लिया व्यर्थ ही
मैंने अपने ऊपर पाप।

विश्वासी था यद्यपि वह तो
किया तथापि मैंने संदेह,
नरकवास ही इसके बदले
मुझे मिलेगा निस्संदेह।

यों पिंगलक जब पछताता था
दुख से व्याकुल होकर मौन,
दौड़ा आया दमनक उस क्षण
यही देखने 'जीता कौन'।

दुखी शेर को लख वह बोला—
'राजा करते नहीं विलाप,
मित्रद्रोह करनेवाले को
दण्ड सदा ही देवें आप!

जो मर गया उसी का चिन्तन
क्यों करना है अब बेकार,
आगे क्या होगा, इसका ही
करें आप अब यहाँ विचार।

आप यहाँ के राजा हैं औ'
हुए आप ही अगर अधीर,
रख पायेगी फिर तो कैसे
प्रजा बिचारी मन में धीर!"

यों दमनक ने दी दिलासा
हुआ शेर भी कुछ तब शान्त,
सभा जुटी वन के जीवों की
गूँज उठा सारा वन-प्रान्त।

पिंगलक ने फिर से दमनक
मंत्री को सौंपा सब काम,
लगा चलाने राज-काज सब
राजा का लेकर वह नाम।

बुद्धि चातुरी दिखलाकर यों
प्राप्त किया खोया सम्मान
सभी मनोरथ पूर्ण हुए औ'
पुलक उठे उसके फिर प्राण!

इस प्रकार अब पंचतंत्र का
प्रथम तंत्र होता समाप्त,
मित्र-भेद-नीति के सहारे
कर सकते हम क्या न प्राप्त!

खरबूजों का सौदा

किसी ज़माने में एक सुल्तान था। वह एक दिन शिकार खेलने जा रहा था। रास्ते में उसे एक किसान दिखाई दिया। वह एक गधे को हाँक कर ले जा रहा था। उस पर कोई गट्ठर लदा था।

सुल्तान ने किसान से पूछा—"क्यों भाई! इस गट्ठर में क्या है?"

"बाबू! इसमें खरबूज हैं। मेरे खेत की यह पहिली पैदाइश है; मौसम से पहिले हुई है, इसलिए में इन्हें ले जाकर सुल्तान को बेचना चाहता हूँ। कहा जाता है कि वे बड़े दानी हैं। उम्मीद है कि अच्छे भाव पर ही खरीदेंगे।" किसान ने कहा। क्योंकि उसने पहिले कभी सुल्तान को न देखा था, इसलिए वह उसे न पहिचान सका।

"सुल्तान, तुम्हारा क्या ख्याल है, इन खरबूजों को कितना देकर खरीदेंगे?" सुल्तान ने पूछा। "कम से कम क्या हज़ार सोने की मोहरें भी न देंगे?" किसान ने कहा।

"अगर सुल्तान कहे कि यह बहुत अधिक है, तब क्या करोगे?" सुल्तान ने पूछा।

"अच्छा, तो पाँच सौ माँगूँगा।" किसान ने कहा।

"यदि कहे कि यह भी अधिक है तो!"

"तीन सौ देने के लिए कहूँगा।"

"इसे भी अधिक कहें तो?"

"सौ देने के लिए कहूँगा।"

"और इसे भी अधिक कहें तो!"

"पचास माँगूँगा।"

"इसे भी अधिक कहें तो!"

"तीस माँगूँगा।"

"और अगर इसे भी अधिक बताये तो?"

श्री नरेन्द्र मोहन सक्सेना

"अपने गधे को सिंहासन में बिठाकर भाग आऊँगा।" किसान ने कहा।

सुल्तान ज़ोर से ठट्ठा मार कर हँसा। उसने किसान को जाने दिया। वह शिकार छोड़कर एक और रास्ते से घर पहुँचा। आते ही द्वार पर पहरेदारों से कहा—"मेरे लिए एक किसान गधा लेकर आयेगा। उसे सीधे मेरे पास ले आना।"

एक घंटे बाद, किसान सुल्तान के महल के पास गया। उसने सुल्तान से मिलना चाहा। पहरेदारों ने उसे और उसके गधे को अन्दर जाने दिया।

तब तक सुल्तान ने अपने कपड़े बदल लिए थे। इसलिए किसान उसे न पहिचान सका। वह खरबूज के गठ्ठर को हाथ में लेकर सुल्तान के सामने खड़ा हो गया।

"लगता है, तुम मेरे लिए कुछ लाए हो, क्या है यह!" सुल्तान ने पूछा।

"हुजूर की मेहरबानी हो तो मैं अपने खेत की पहिली पैदाइश देने आया हूँ।" किसान ने कहा।

"तुम्हारा क्या ख्याल है कि मेरी मेहरबानी कितनी बड़ी होनी चाहिए!" सुल्तान ने पूछा।

"हज़ार दीनारें।" किसान ने कहा।

"यह तो बहुत अधिक है।" सुल्तान ने कहा।

"पाँच सौ।"

"यह भी अधिक है।"

"तीन सौ।"

"यह भी अधिक है।"

"एक सौ।"

"यह भी अधिक है।"

"पचास।"

"यह भी अधिक है।"

"तीस।"

"यह भी अधिक है।"

"उस मनहूस चेहरेवाले का रास्ते में मिलना बुरा हुआ। अगर तीस दीनारें नहीं देंगे तो खरबूज भी न दूँगा। यही पक्की बात है।" किसान ने कहा।

सुल्तान हँसा तो, पर उसने कोई जवाब न दिया। यह देख किसान ने सुल्तान के मुँह को गौर से देखा। वह जान गया कि वह आदमी ही, जो रास्ते में दिखाई दिया था, सुल्तान था।

"हुजूर! मेहरबानी करके मुझे तीस दीनारें दिलवाइये। नहीं तो....मेरा गधा बाहर ही बँधा है!" उसने कहा।

सुल्तान हँसते हँसते लोट-पोट हो गया। नीचे गिर गया। उसने खजांची को बुलाकर कहा—"इस किसान को हज़ार दीनारें दे दो। उसके बाद, तीन सौ, सौ, पचास, तीस, दीनारें, एक के बाद एक दे दो!"

जब एक बोरी खरबूजों के लिए उसे उन्नीस सौ अस्सी दीनारें मिलीं तो उसके मुख से बात न निकली। वह सुल्तान को बार बार सलाम करता चला गया।

एक बल्गेरियन कथा : # जल्दबाजी या आलस्य

एक पिता अपने लड़के के लिए पालना बनवाने के लिए बढ़ई के पास गया। दाम निश्चित कर उसने कहा— "देखो भाई, अच्छी तरह इसे बनाओ, और जल्दी दो।"

"भाई! यह काम जल्दी न होगा, क्योंकि जल्दबाज़ी कारीगर के लिए शर्म की बात है।" बढ़ई ने कहा। "हाँ, हाँ, मैं जानता हूँ। पर जल्दी इसे बनाकर दो।" यह कहकर पिता चला गया। एक सप्ताह बाद वह पालना लेने गया। बढ़ई ने कहा—"अभी वह तैयार नहीं हुआ है।" पिता ने पूछा—"क्यों नहीं तैयार हुआ!" बढ़ई ने जवाब दिया—"मैंने कहा था न जल्दबाजी कारीगर के लिए शर्म की बात है" एक महीना गुज़र गया। पिता फिर पालना लेने गया। "अभी आपको थोड़े दिन इन्तज़ार करनी होगी।" बढ़ई ने कहा।

इसलिए पिता ने एक और महीना देखा। पर तब भी पालना तैयार न हुआ। एक एक महीना करके पूरा साल गुज़र गया। और इस बीच उसका लड़का इतना बढ़ गया कि पालने की ज़रूरत ही न रही। समय गुज़रता गया, और नन्हा बचा बड़ा आदमी हो गया। उसने शादी भी कर ली। उस के भी एक बचा हुआ। वह भी बचे के लिए पालने की तलाश करने लगा।

"देखो, बेटा। जब तुम पैदा हुए थे मैंने तुम्हारे लिए पालना बनाने के लिए बढ़ई से कहा था। वह गाँव के दूसरे सिरे में रह रहा है। अगर उसने बना दिया हो तो लेते आना।" पिता ने अपने लड़के से कहा।

लड़का बढ़ई को ढूँढने निकला। उसने उसकी दुकान में घुसकर कहा—"जब मैं पैदा हुआ था तब मेरे पिता ने एक पालना बनाने के लिए कहा था। यदि वह तैयार हो तो दे दो, मेरे भी अब एक लड़का हुआ है।"

बढ़ई ने कहा—"अभी अभी लड़का हुआ है और तुम तुरत पालना चाहते हो। मैंने तुम्हारे पिता से कहा था, और अब तुम से कहता हूँ कि मैं जैसे तैसे जल्दी में अपना काम नहीं करना चाहता। जल्दबाजी कारीगर के लिए शर्म की बात है।"

काजी की सूझ

एक नवाब के यहाँ एक वज़ीर था। उसने एक दिन बहुत ही खूबसूरत दासी खरीदी। यह बात नवाब को मालूम हो गई। उस दासी को स्वयं देखने के उद्देश्य से उसने वज़ीर के पास कहला भेजा, आज रात मैं तुम्हारे घर खाना खाने आऊँगा।

वज़ीर ने नवाब के लिए तरह तरह की तरकारियाँ, माँस व पेय तैयार करवाये। पेय देने के लिए नई दासी को नियुक्त किया। भोजन खतम करके, दोनों पेयों का सेवन करते करते गप्पें मारने लगे।

यकायक नवाब ने कहा—"वज़ीर, इस दासी लड़की को हमें बेच दो। जितना दाम तुमने उसके लिए दिया है, मैं ठीक उसका दुगना दूँगा।

"हुज़ूर, माफ फरमायें। मैं इस दासी को बेचना नहीं चाहता!" वज़ीर ने कहा।

"तो इसे भेंट कर दो।" नवाब ने कहा।

"मैं यह भी नहीं करना चाहता।" वज़ीर ने बिना किसी संकोच के कहा।

वज़ीर का रुख देखकर नवाब आग-बबूला हो गया—"अगर तुमने इस दासी को मुझे न बेचा, या भेंट में न दी तो मैं अपनी बड़ी बेगम को तलाक दे दूँगा।" नवाब ने क़सम खाई।

"मैं भी अपनी पत्नी, बाल-बच्चों को छोड़ दूँगा, परन्तु इस दासी को आपको न दूँगा। अगर मैंने दे दी, तो मैं खुदा को धोखा दे रहा हूँगा।" वज़ीर ने कहा।

दोनों ने खूब शपथें कीं। आखिर पछताने लगे कि वे क्यों इतने बड़बड़ाये थे।

"अब क्या किया जाय? हम दोनों कैसे बिना अपनी प्रतिज्ञायें तोड़े इन उलझनों से बाहर पड़ें।" नवाब ने कहा।

कुमारी रज़िया

"इसका उपाय केवल क़ाज़ी ही बता सकता है। हुज़ूर का हुकुम हो तो उन्हें बुलवाता हूँ।"

नवाब मान गये। वज़ीर ने क़ाज़ी को बुलवाया। क़ाज़ी ने सब-कुछ मालूम कर लिया—"यह ऐसी कोई बड़ी समस्या नहीं है। वज़ीर यदि दासी को आधा बेच दें और आधा भेंट में दे दें, तो समस्या सुलझ जायेगी।" क़ाज़ी ने सलाह दी।

नवाब इस सलाह पर बड़ा खुश हुआ। उसने कहा—"वाह! यह अच्छी सलाह है। अब एक और सलाह बताओ। जब तक यह दासी रहेगी, मेरे ज़नाने में घुस न सकेगी। कानूनी तौर पर इसको स्वतन्त्र करने के लिए बहुत-सी बातें हैं। इसके लिए भी कोई रास्ता बताओ।"

"इसका एक ही आसान रास्ता है—

"इसकी अभी किसी के साथ शादी करवाइये। इसकी गुलामी भी तुरत ख़तम हो जायेगी। फिर उससे इसको तलाक दिलवाइये। तब हुज़ूर इससे शादी कर सकेंगे।" काजी ने कहा।

"बहुत अच्छा! एक सिपाही को बुलवाइये।" नवाब ने वज़ीर से कहा।

वज़ीर ने अपना एक सिपाही बुलवाया। उसके साथ दासी की शादी कर दी गई। काजी ने कहा—"अब यह दासी नहीं है। आज़ाद है। अब सिपाही से इसको तलाक दिलवाइये।"

पर सिपाही इसके लिए न माना। "मेरी पत्नी बहुत खुबसूरत है। मैं उसे कतई नहीं छोड़ना चाहता।" उसने कहा। उसे बहुत डराया-धमकाया गया। पर उसने न सुनी।

नवाब खौल उठा। उसने काजी से कहा—"काजी, क्या तेरी यही सलाह है? अगर तुमने यह समस्या न सुलझाई तो मैं तुम्हारे सिर को क़िले के बाहर लटकवा दूँगा।"

"हुजूर, जल्दी कर रहे हैं। यह समस्या कोई खास कठिन नहीं है। अगर वज़ीर इस सिपाही को मेरा गुलाम बना दें, तो समस्या आप ही हल हो जायेगी।" काजी ने कहा।

"ले जाओ।" वज़ीर ने कहा।

काजी ने दासी की ओर देखकर कहा—"यह सिपाही मेरा गुलाम है, इसे मैं तुम्हें दे देता हूँ। लेती हो?"

"हाँ, हाँ, जरूर!" उसने कहा।

"तब क्या? कानून के मुताबिक तेरा गुलाम तेरा पति नहीं हो सकता। तुम्हारी शादी इस तरह रद्द हो गई, और मेरा काम भी खतम हो गया।" कहता हुआ काजी उठा।

नवाब की खुशी का ठिकाना न था। उसने काजी को रोककर कहा—"हमारा इन्साफ कर, अच्छी सलाह देने के लिए यह लो इनाम!" उसने एक थैली में से सोने की मुहरें निकालकर उसे दीं।

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता

दिसम्बर १९५७ :: पारितोषिक १०/

कृपया परिचयोक्तियाँ कार्ड पर ही भेजें ।

ऊपर के फ़ोटो के लिए उपयुक्त परिचयोक्तियाँ चाहिए। परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्द की हों और परस्पर संबन्धित हों। परिचयोक्तियाँ पूरे नाम और पते के साथ कार्ड पर ही लिख कर निम्नलिखित पते पर ता. ७, अक्तूबर '५७ के अन्दर भेजनी चाहिये।

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता
चन्दामामा प्रकाशन
वडपलनी :: मद्रास - २६

अक्तूबर – प्रतियोगिता – फल

अक्तूबर के फ़ोटो के लिये निम्नलिखित परिचयोक्तियाँ चुनी गई हैं। इनके प्रेषक को १० रु. का पुरस्कार मिलेगा।

पहिला फ़ोटो:
'देखो तो आता है कौन?'

दूसरा फ़ोटो:
'सावन आया, क्यों हो मौन?'

प्रेषक : सरोजरानी सिन्हा,
C/O बी. एन. सिन्हा, १९६, रिसा रोड कदेया, जमशेदपुर, सिंहभूम.

साधारण सस्तन जन्तु

पहिले कुछ अद्भुत सस्तन जन्तुओं के बारे में जानकारी दी गई थी। साधारण सस्तन जन्तुओं और उनमें मुख्य भेद यह है कि वे माँ के गर्भ से अंडे के रूप में, अथवा अपूर्ण अवस्था में आते हैं। साधारण सस्तन जन्तु तभी पैदा होते हैं, जब पूरी तरह उनका रूप बन जाता है। हम यह पहिले ही बता चुके हैं कि पहिले भूमि, जल, आकाश, सभी जगह सरीसृपों का राज्य था। सस्तन जन्तु भी ऐसे हैं। इनमें, भूचर ही नहीं जलचर और उड़नेवाले पक्षी भी हैं।

हमें दिखाई देनेवाले सस्तन जन्तुओं में हाथी सबसे बड़ा है। हाथी के पास एक ऐसी चीज़ है, जो औरों के पास नहीं है, वह है सूँड। हाथी कई प्रकार के होते हैं। हमारे देश के हाथी कुछ छोटे हैं। अफ्रीका के हाथी, भारत के हाथियों से काफ़ी बड़े होते हैं। उनका कद लगभग 11½ फुट होता है, और भार छः टन। उनके कान भी बड़े होते हैं। पर विशेषज्ञों का कहना है कि हाथी अफ्रीका महाद्वीप से ही अन्यत्र गये और एशियायी हाथियों में कालक्रम के अनुसार कुछ परिवर्तन हो गये।
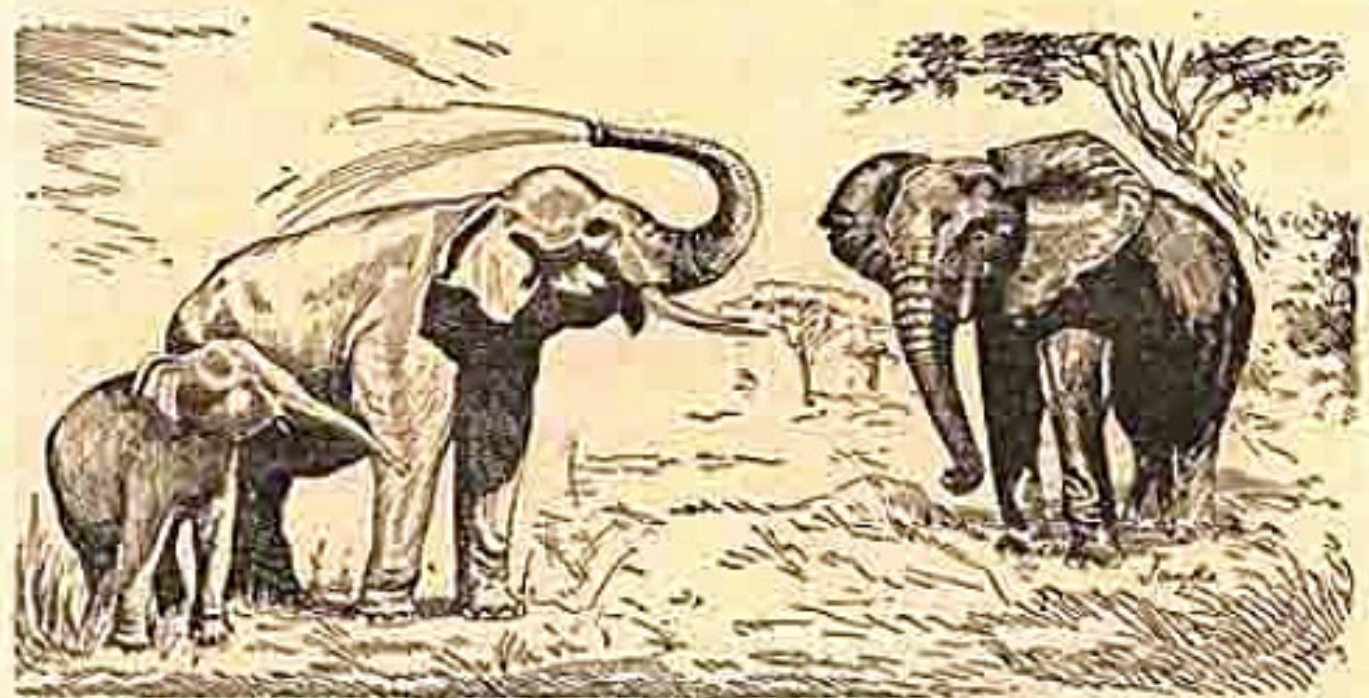
जन्तुओं में, सिवाय बन्दरों के, किसी में हाथी से अधिक अक़ नहीं है। क्योंकि बुद्धि में वह मनुष्य से कम है, इसलिये उसे मनुष्य का गुलाम होना पड़ता है।

हम जानते ही हैं कि जलचरों में तिमिंगल बहुत बड़ा होता है। पर शायद यह बहुत लोगों को नहीं मालूम कि आज जो तिमिंगल हम देख रहे हैं, वह पुराने ज़माने के बड़ी छिपकलियों से बड़े हैं। जहाँ तक हम जानते हैं इस तिमिंगल से बड़ा जन्तु अभी तक पैदा नहीं हुआ है। तिमिंगल 100 फीट से अधिक होता है। उसका भार करीब करीब 120 टन तक होता है। सद्यः जात तिमिंगल की लम्बाई 25 फीट हो सकती है। यह और स्तन जन्तुओं की तरह बच्चे पैदा करता है। फेफड़ों से साँस लेता है। बीस मिनट में एक बार साँस लेने के लिए तिमिंगल समुद्र के सतह पर आता है।

हवा में उड़नेवाला स्तन जन्तु चमगादड़ है। चमगादड़ तीन प्रकार के हैं। इनमें छोटे चमगादड़ कीड़े मकोड़ों को खाते हैं। बड़े चमगादड़ फल खाते हैं। कुछ ऐसे चमगादड़ भी हैं, जो खून पर जीते हैं। इनके दान्त नहीं होते। इनके पेट छोटे होते है। सिवाय द्रवों के वे कुछ नहीं पचा सकते।
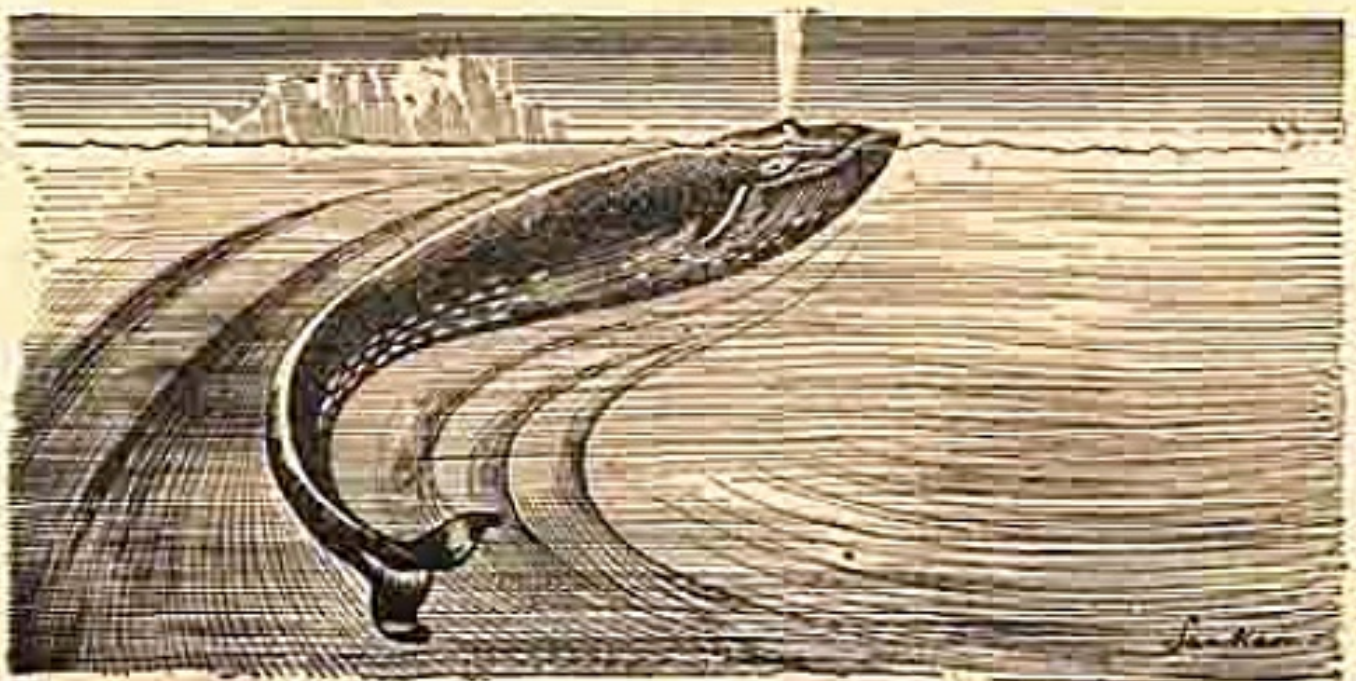
समाचार वगैरह

पिछले दिनों राजभाषा आयोग का प्रतिवेदन प्रकाशित हुआ।

इस आयोग ने अंग्रेज़ी के स्थान पर हिन्दी को प्रतिष्ठित करने के लिए कई सुझाव दिये हैं।

इन सुझावों पर विचार विमर्श करने के लिए, पार्लियामेन्ट के सदस्यों की एक समिति नियुक्त की जायेगी।

आयोग के अध्यक्ष स्व. बी. जी. खेर, अब दिवंगत हो चुके हैं।

* * *

मलाया अब स्वतन्त्र है। वह भी भारत की तरह कोमन वेल्थ का सदस्य है। इससे पूर्व मलाया ग्रेट ब्रिटेन का उपनिवेश था। यह स्वतन्त्रता उत्सव बड़े उत्साह से मनाया गया।

* * *

सिंगापुर की ख़बर है। एक भारतीय नाई ने अपनी पाल्तू बिल्ली के कानों में छेद करवाये ताकि वह उसे सोने की बालियाँ पहिना सके। इस सम्बन्ध में उसने बड़े समारोह और संस्कार की आयोजना की।

यद्यपि कई क्षेत्रों में इसका विरोध किया जा रहा है।

वह फ्लू की बीमारी, जो पिछले महीने भारत में थी, अब अफ्रीका, और अमेरीका में फैल रही है।

अनुमान किया जा रहा है कि "फ्लू" की दूसरी "तरंग" अक्तूबर में भारत में फिर आये।

* * *

डा. लुई सामी ने, जो एक भारतीय डाक्टर थे और प्रायः गरीब मरीजों की चिकित्सा किया करते थे, अपनी सारी सम्पत्ति, जो क़रीब २६०,००० पाउन्ड की है, गरीबों की औषधी—चिकित्सा करने के लिए दान कर दी।

डा. लुई सामी अविवाहित थे। और सिंगापुर में प्रेक्टीस किया करते थे। हाल ही में उनकी मृत्यु हुयी।

कई प्रयत्नों के बावजूद, पंजाब में हिन्दी रक्षा समिति द्वारा चला गया सत्याग्रह जारी है।

पं. नेहरू ने इस सत्याग्रह की आलोचना की है। सत्याग्रहियों की गिरफ्तारी चल रही है।

* * *

सुना जाता है कि उत्तर प्रदेश के आमों के बागों में एक प्रकार की बीमारी फैल रही है, जिससे कि आशंका की जाती है कि आम के बागों को काफ़ी नुक्सान हो।

वैज्ञानिक रूप से बीमारी की जाँच-पड़ताल की जा रही है।

* * *

भारत ने फिर पोलो में चेम्पियनशिप जीत ली है। भारत की टीम ने फ्रेन्च, स्पेनिश, मेक्सिकन मिश्रित टीम को परास्त किया।

चित्र - कथा

छुट्टी के दिन दास, वासू एक दोस्त को लेकर आम के बाग में गये। साथ "टैगर" भी था। वे बिस्कुट खाने के लिये एक जगह बैठे। "टैगर" पास आया। नये लड़के ने उसे ठुकरा दिया। थोड़ी देर बाद पास की झाड़ी में कुछ हलचल-सी हुई। तीनों ने पास जाकर देखा तो उसमें कुछ न था। पर जब वे अपनी जगह वापिस गये तो "टैगर" नये साथी के बिस्कुट आराम से खा रहा था। नया साथी हैरान था।

Printed by B. NAGI REDDI at the B.N.K. Press (Private) Ltd., and Published by him for Chandamama Publications, from Madras 26—Controlling Editor: SRI 'CHAKRAPANI'

यदि आपका बच्चा
इस हालतमें हों
मॅनर्स
ग्राइप मिक्श्चर दीजिए
और देखिए मुस्कराहट
उसके चेहरे पर फिर
खिल उठती है।
हर रविवार को सवेरे १०-३० बजे से एक घंटे तक रेडियो सीलोन से १९ मीटर पर 'दुनिया रंग रंगीली' कार्यक्रम सुनिये।
श्रेष्ठता के प्रतीक
मार्के को अवश्य देखें। यह मैनर्स उत्पादन का प्रमाण है।
GEOFFREY MANNERS & CO. PRIVATE LTD., BOMBAY • CALCUTTA • DELHI • MADRAS
ASF/GM 3

माताओं का घनिष्ठ मित्र
डाक्टर के पास
लिटिल्स
ओरियण्टल बाम
सर्दी-खांसी, सर दर्द तथा किसी भी प्रकार के दर्द के लिये

Photo by D. I. Chanthamian

पुरस्कृत परिचयोक्ति

सावन आया क्यों हो मौन?

प्रेषिका : सरोजरानी सिन्हा, जमशेदपुर

CHANDAMAMA (Hindi) OCTOBER 1957 Regd. No. M. 8452